# अथातो काव्य जिज्ञासा

वीरेन्द्र मल्लिक



पूजी द्वारा विकासक रूप मे प्रतिपादित बाजारवाद, सबकिछु केँ 'पसार' बना देलकए। प्रशासन, न्याय, वित्त, सूचना, स्वास्थ्य, शिक्षा... सबकिछु बाजार नियंत्रित होइत मनुखक विसंगति केँ ओहि स्तर तक ल' गेलए जे सांस्कृतिक परिचिति पर्यंत विलोपित भ' जाए। अही मर्मांतक पीड़ा सँ आप्लावित अछि ई कविता संग्रह 'अथातो काव्य जिज्ञासा'।

कविता बिडंबनापूर्ण परिवेशक प्रतिपक्षी अछि, चिंतित अछि आ अस्तित्वक प्रश्न सँ पाठक केँ आविष्ट करै अछि, सोचबाक लेल, सक्रिय हेबाक लेल उत्प्रेरित करै अछि।

*पूजी, बाजार आ साम्राज्यवादक वर्चस्व*
*हमर भाषा, हमर संस्कृति, हमर सर्वस्व*

विश्व मानवीय दृष्टिकोणक संग कविता, मनुष्यताक उत्कर्षक लेल प्रतिबद्ध अछि, बिना कोनो संशय-ओझरौनी के बेस स्पष्ट बिम्ब मे मुखर अछि, सत्यक साक्षात्कार लेल तत्पर अछि।

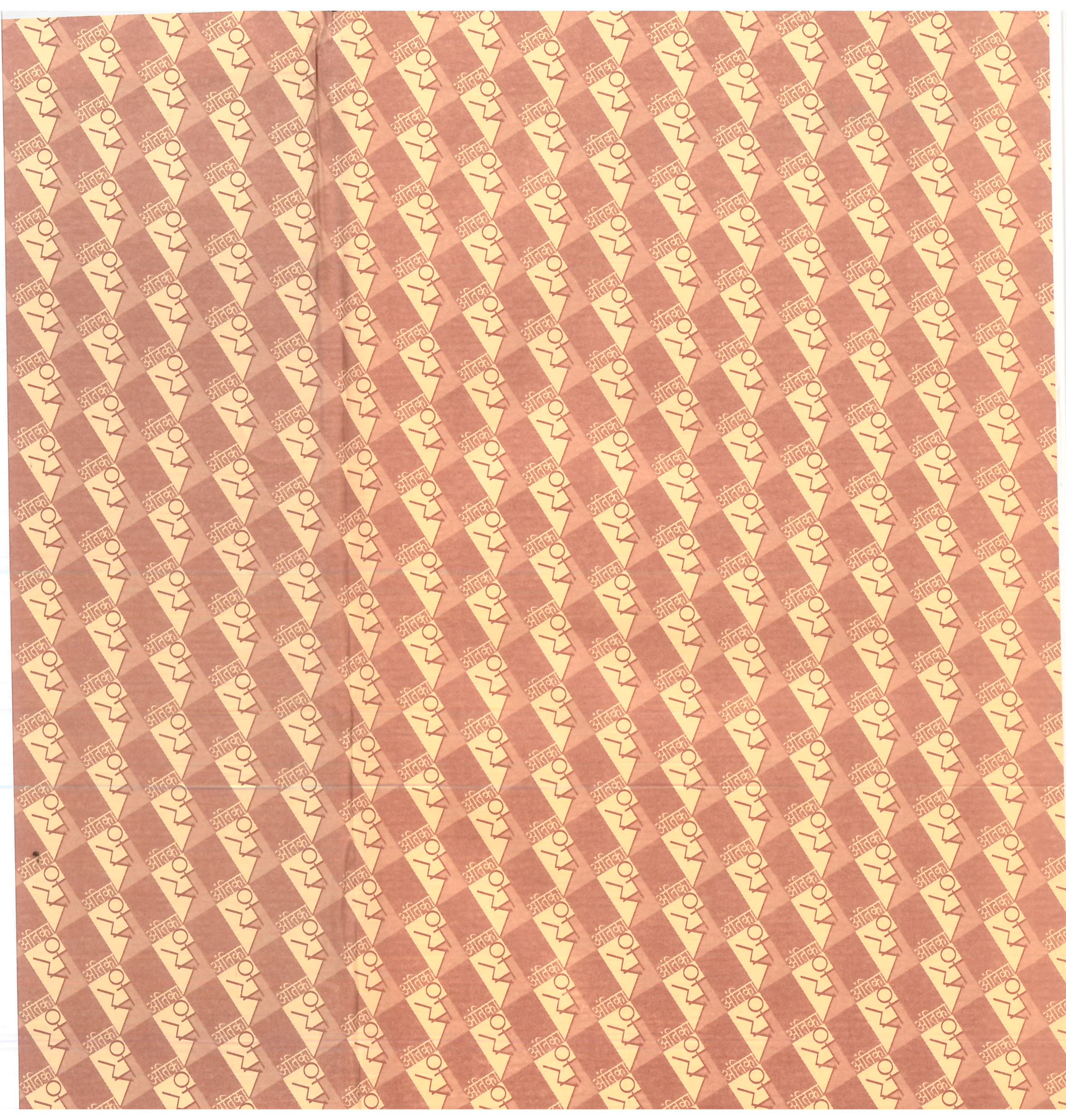
*..... लोकक पेट पर*
*मारैत लात नित नव-नव सिद्धांत*
*आ विज्ञापनक भरमार।*

सामयिक, असत्य आ अन्यायक बलधकेल अधिनायकवादी सत्ताक पिशाची-नर्तनक काल मे, कविता अपन कर्तव्य सँ संपृक्त अछि, आशा आ विश्वासक संग अडिग अछि।

*मुदा नागरिक वीर देश केर*
*एखनहु बरूदक ढेरी पर*
*कविताक संग विहुँसि खेलाइछ।*

एक अग्निजीवी कविक लेल इएह ने काव्य-स्वभाव, कविता-प्रवृत्ति छी!

**—कुणाल**
*(कवि-रंगकर्मी)*



पूजी द्वार
सबकिछु
वित्त, सू
नियंत्रित
ल' गेलए
भ' जाए।
कविता सं
कवि
चिंतित अ
आविष्ट व
लेल उत्प्रेरि
*पूजी,*
*हमर*
विश्व
मनुष्यताक
कोनो संशय
अछि, सत्य
*..... ल*
*मारैत*
*आ वि*
सामयि
अधिनायकव
कविता अप
विश्वासक स
*मुदा ना*
*एखनहु*
*कविता*
एक अ
स्वभाव, कवि

# अथातो काव्य जिज्ञासा

# अथातो काव्य जिज्ञासा

(कविता-संग्रह)

वीरेन्द्र मल्लिक



अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.

ISBN 978-93-91925-69-7

**अथातो काव्य जिज्ञासा**



पहिल संस्करण (सजिल्द) : 2023

**मूल्य : 350.00 रुपए**

प्रकाशक
**अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.**
सी-56/यूजीएफ-IV, शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)
फ़ोन : +91-9871856053
ई-मेल : antika56@gmail.com
वेबसाइट : www.antikaprakashan.com

आवरण चित्र : संजीव शाश्वती

मुद्रक : आर.के. आफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

ATHATO KAVYA JIGYASA (Collection of Maithili Poems) by Virendra Mullick
Published by Antika Prakashan Pvt. Ltd., C-56/UGF-IV, Shalimar Garden Ext.-II Ghaziabad-201005 (UP) India
**Price : ₹ 350.00**

*सुख-दुखक संगिनी*
*धर्मपत्नी*
*जे आब नहि रहली*
*मणिबाला जी केँ*
*हमर ई कविता-संग्रह*
*सप्रेम*

*उच्चो वा नीचो वा न कोऽपिजनः।*
*न च नितरा पापकृन् न वा पवित्रस्वरूपः॥*
**—वेद वाक्य**

*No Human is high or low,*
*no man is a condemned sinner or*
*a santifies being...*
**—Veda Hymns**

*नारी तु समादरणीया। एष ईश्वरादेशः*
*सा वै भवति माता च कन्या च भगिनी वा।*
*तां प्रति यत् कर्त्तव्यं तदनकरणं नरकं नयति।*
**—वेद वाक्य**

*Ishwar enjoins you to treat*
*women well for they are your*
*mothers and daughters and may be, sisters.*
*Shrinking responsibilities towards women will*
*open up your path to hell.*
**—Veda Hymns**

# अनुक्रम

## अशोक वृक्ष

डाक बंगला केर सोझा मे
हरियर-हरियर दूबिक सागर
अछि लहराइत
चमचमाइत अछि पानि निरन्तर
चहरदेवारिक काते-काते
काटल-छाँटल एक पंक्ति मे
अशोक वृक्ष अछि ठाढ़ अनेकहु
'स्वीमिंग सूट' पहिरने जनु अछि
कुदबा-लए तैयार 'पुल' मे
चुस्त-दुरुस्त अनेकहु तरुणी।

## बबूर गाछ

नङघरङ अछि ठाढ़ बबूरक गाछ
कतहु नहि एकहु पत्ता
देखना जाइछ दूबर-पातर डारि सहस्रो उर्ध्वमुखी
नभ सँ बतिआइत
नहि भेलैए काँट एखन धरि कोनो डारि मे
मुदा फूटि रहलै-ए कनोजरि कतहु-कतहु किछु
देखल जाइछ
एक डारि पर कोइली बैसल रहि-रहिक' किछु
बाजि उठैए
बुझबा मे किछुओ नञि अबैए
गौर केला पर बुझना जाइछ
हड्डी निकलल पेट धँसल जनु केओ भिखमंगा
साधिकार खाली बाटी लए
बड़ी काल सँ ठाढ़ द्वारि पर चिकरि रहल हो।



## श्यामा सुन्दरि

रेल लाइन के काते-काते
दूर-दूर धरि पसरल कारी-स्याह पहाड़ी
रेल मे बैसल देखि रहल छी
गाछ-वृक्ष सभ छूटि रहल अछि
सरसराइत किछु निकलि जाइत अछि
पड़ा रहल अछि घर-द्वार सभ एक-एक क' कए
दृष्टि मे कौखन लौकि जाइत अछि
बिजलौका-सभ कारी-स्याह पहाड़ी पुनि-पुनि
खिड़की लग भए ठाढ़ जेना केओ
नव विवाहिता श्यामा सुन्दरि
हुलकी मारि रहलि हो ककरो।

# आदिवासीक घर

खिड़की मे खंडित अछि भए गेल
सुन्दर स्वच्छ नील आकाश
कृत्रिम उपकरणक प्रयोग सँ
अछि भए गेल विषाक्त बसात
नहुँए-नहुँए चान उगल अछि
दूर पहाड़ी-गहवर सँ
सजि-धजि क' कनिया निकललि हो
जेना सूति-उठि क' कोहबर सँ
जेठ मास केर शुक्ल पक्ष अछि
बिजली चमकि रहल क्षण-क्षण
सौंसे नभ मे घूमि रहल अछि किन्तु
कतहु किछु बादल-खण्ड
दूर-दूर मे देखना जाइछ
जेना आदिवासी केर घर।



# पटना सँ आयल अछि संवाद

आइ संसार मे उनटा बसात बहि रहल अछि
बाप केँ बाप कहबा मे लोक डरि रहल अछि
निपत्ता भए गेल वर्ग-चेतना
सामाजिक आपकता
आ पारिवारिक प्रेम-निष्ठा लेलक पतनुकान
पति पत्नी संतान
आ अपन मकान
यैह भेल परम सत्य
टाका आ शक्तिक अतिरिक्त
बाकी सब फूसि
साम्राज्यवादक विस्तार चेतनाक संहार
आइ मनुक्ख केँ मनुक्ख नहि रहय देल गेल अछि
आइ संसार मे उनटा बसात बहि गेल अछि

आइ चेतना-सम्पन्न कविताक स्थान
चुटकुल्ला लए रहल
पुनः कुण्डलिया दोहा आ फकड़ाक बजार गर्म भए रहल
चिड़ै गाछ-वृक्ष आकाश
सोझा मे आबि रहल
रसातल मे चल गेल मनुक्ख
ठेकेदार आ हलुआइ सभक वर्चस्व
साहित्य मे देखल जाइछ
युद्ध-स्तर पर कएल जा रहल

विचारक वंध्याकरण
तर्क-सम्मत संवादक स्थान
भड़काउ चौकाउ आ अनर्गल बात लए रहल
एहि मे अनेकहु समानधर्मा
सम्मिलित भए रहलाह अछि

आइ साहित्य मे प्रदूषण आ आतंकवादक सृष्टि भए रहल अछि
आइ संसार मे उनटा बसात बहि रहल अछि
आजुक तकनीकी क्रांति
कोटि-कोटि मनुक्ख कें नरक मे झोंकि
मुट्ठी भरि लोक कें
स्वर्ग मे लए जयबाक कए रहल प्रबन्ध
नहि रहलै समाज सँ ओकरा कोनो सरोकार वा सम्बन्ध
प्रगतिशील जनतांतित्रक आ आधुनिक परम्परा कें
मटियमेट कए
उपभोक्ता संस्कृतिक बीआ बाग कएल जा रहल
कम सँ कम कपड़ा पहिराए
नारी कें चिनबार सँ सड़क पर उतारल जा रहल
सुंदर-सुंदर बोतल मे बन्द माहुर
आइ हाट बजार चौबटिया पर रबड़ी जकाँ बाँटल जा रहल अछि
आइ संसार मे उनटा बसात बहि रहल अछि

आइ क्षति-ग्रस्त भेल अछि मानवीय अस्मिता
क्षीण भेल अछि जन सामान्यक संघर्ष-शक्ति
नाङर-लुल्ह कएल जा रहल भविष्य
सर्वहारा कें उपभोक्ता मे बदलि देल भेल अछि
संधर्षशील लोक कें
युद्ध-स्तर पर दलाल बनाओल गेल अछि
आधुनिक स्वर्ग प्रदान करबाक नाम पर
लोक कें प्राचीन नरक मे धकेलल जा रहल
शिक्षित बेरोजगारक विराट फौज तैयार कएल जा रहल



गरीबी हटयबाक नाम पर
गरीब कें आओर गरीब बनाओल जा रहल
आइ जनसंख्या-विस्फोटक धमाका देश कें हिला रहल अछि
आइ संसार मे उनटा बसात बहि रहल अछि।

## बारूदक ढेरी पर कविताक संग खेलाइत

कोन अपराधक यातना सहि रहल छी हम
की कोन जन्मक दारुण अभिशाप केँ भोगि रहल छी हम
की कोन अकादारुण बोन मे बौआ रहल छी हम
की कोन सुनसान जनपद मे आबि गेल छी हम—
से नहि अछि बुझाना जाइत

आइ जतए हम घूमि रहल छी
वास्तव मे अछि कएक प्रांत केर संगम-स्थल उग्रवाद केर केन्द्र
नक्सलाइट केर गढ़ जग-जाहिर
देवलोक मे जेना महेन्द्र दूर-दूर धरि पसरल जंगल
कतहु नञि हो ककरो सँ भेंट
माटि एतुक्का पीयर-पीयर सोना माटी
कतहु-कतहु अछि पानिक स्रोत
पिछड़ा वर्गक जनी-जाति केर दूर-दूर पर दू-चारि घर
उर्वर भूमि खेत बिनु जोतल
जहाँ देखै छी चौरे-चौर
तैयो अपना माटि-पानि लए लोक लड़ि रहल
एकजुट भए देखना जाइछ
घर-घर मे चहल-पहल
स्त्री-पुरुष दुहुक हाथ मे दबिला कत्ता दियासलाइ
अस्मिताक रक्षा-हित अनुखन फूकि रहल ओ अपन कमाइ
अस्त व्यस्त संत्रस्त व्यवस्था
नहि छल कहियो एहन अवस्था
भए गेल अछि सब जानि-बूझि कए मूक बधिर निरुपाय
बिसरि गेल सब गौरव-गाथा



पूर्वज केर बलिदानी माथा बिरसा मुंडा केर अभिलाषा
वनराजक अभिमानी बच्चा किएक भेल असहाय

सड़ल लोक अछि कुर्सी छेकने
भुजबल सत्तारूढ़
सत्ताधारी हो की विपक्षी
नहि अछि केओ दूधक धोअल लुटबा मे अछि सब मशगूल
भू-लुंठित छथि प्रज्ञा एखनहुँ पढ़लो पुत्र बनल बकलेल
ककरहु देह पर झूले केथरी
ककरहु घर मे धन अलेल
भ्रष्टाचारक एहि बिहाड़ि मे
बड़का-बड़का गाछ उपड़ि गेल सिरगरहा सेहो भेल चित्त
बाबू-भैया बिका रहल छथि देखा-देखी
दू पैसा मे नित्तहु-नित्त
न्याय जाहि पर छलै भरोसा
भ्रष्टाचारिक हाथ बिकायल
अनाचार केर दलदल मे फँसि सत्य-न्याय अछि भूमि-समायल
प्यादा सँ फरजी धरि सब के 'रेट' एतय छै बान्हल
सब केँ जानल
लोक बेगरते भेल अछि आन्हर
सब धड़फड़ मे अछि सुतारए चाहैत निज-निज काज
एतय सुशासन केर नाम पर चलि रहल अछि जंगल राज
चाटुकार सब उड़ा रहल अछि
रसगुल्ला मलपूआ
मसिजीवी केर धिया-पुता केँ अन्न-वस्त्र नहि
स्त्री केँ नहि नूआ
राजनीति पर्याय बनल अछि भ्रष्टाचारक सरिपहुँ
अन्न वेत्र मरि रहल लोक अछि सगर देश मे एखनहुँ
द्रुत विकास केर डिगडिगिया अछि
बाजि रहल दिन-राति दंगा आओर फसादक जड़ि अछि
गोत्र वर्ग आ जाति
अर्थव्यवस्था असमान अछि

विषम बनल सुख-भाग
जन्म सँ नहि कियो बड़का-छोटका मानव-निर्मित बाभन-चमार
संघर्षक इतिहास कहैए मूल समस्या एकरहि
हाहाकार मचल अछि सगरहि
संघर्षहि मे जन्म भेल अछि संघर्षे अछि जीवन
अंत काल धरि चलैत रहत संघर्ष रुकत नहि धरत रूप नित नूतन

आइ विश्व अछि देखि रहल एक बड़का अजगूत
आतंकवादक जनक लड़ि रहल
आइ ओकरहि प्रतिकूल
शेखी अपन बघारि रहल अछि ठानि रहल अछि युद्ध
अपनहि बुनल जाल मे सरिपहुँ ओझरायल अछि आइ महाजन
साम-दाम ओ दंड-भेद सँ
त्रस्त भेल अछि सबतरि बहुजन
वर्चस्वक एहि महायुद्ध मे
मित्र देश अछि जागल
आनहुँ-आनहुँ महाशक्ति अछि 'महाजोठ' मे लागल
अस्तित्वक एहि महासमर मे
फूजल अछि बजार
बेचल अछि जा रहल धड़ाधड़ आणविक हथियार
एटम हाइड्रोजन केर परिणति भोगि चुकल अछि ई संसार
महाविभीषिका केँ भोगने अछि लोक एतुक्का बारम्बार
हजारहु वर्षक परम्परा श्रद्धा निष्ठा केँ
कएल जा रहल ध्वस्त अति प्राचीन सभ्यता-संस्कृति
भए रहल अछि भ्रष्ट
मानव-मूल्य ओ न्याय-अन्यायक कथा भ' रहल नष्ट
पुरान मत्स्य-न्याय भ' रहल आइ अछि चरितार्थ
समाजवाद तँ नाम लेल अछि
फासीवादहि भेल यथार्थ
महामत्त भ' गेल माइनजन सत्ता केर निसाँ मे आइ
मोने-मन गुड़-चाउर फाँकि रहल बाँटि रहल अछि लाइ-मिठाइ
किन्तु एतय परिदृश्य आओर अछि



अवग्रह मे अछि सब के प्राण
लुदकी मारने
कूटनीति केर बाँहि पकड़ने धर्मराज छथि देखना जाइत
मुदा नागरिक वीर देश केर
एखनहुँ बारूदक ढेरी पर कविता के संग विहुँसि खेलाइछ।

# धन्य थिक ब्रह्माणी नदीक जल

डर लगैछ जल मे
पयर देबा मे भीतर पैसबा मे
एक फेनोज्ज्वल हिलकोर सँ आप्लावित
केराक थम्भ
जी अम्मत भेलो सन्ता
बेरि-बेरि आम खयबाक सेहन्ता
खटमिट्ठी चटबाक लिलसा
एकहि नदी मे दोबारा स्नान कयला सन्ता
सर्वथा नव अनुभव शब्दातीत
जीवनक अभिनव स्वाद मीत

सदानीरा अन्त:सलिला नहि होइछ कखनहुँ
दूषित-प्रदूषित
निरन्तर प्रवाहित होइत
बँटैत रहैछ बयन पीयूषवर्षी मेघ जकाँ
अहिब' फर आ ठकुआ
बिलहैत रहैछ सभ कें अपन अमृत-वारि
नव जीवनक संचार
ऊर्जाक प्रसार होइत रहैछ नित्तहुँ
झाड़-झंखाड़ करैत साफ
स्त्री-पुरुषक शारीरिक विकार
करैत परिष्कार
जीव-जन्तुक तृषा कें करैत शांत-परितृप्त



हजार-लाखहु वर्ष सँ प्रवहमान ई धार
जोगौने अछि शिला-खण्ड
बनौने अछि ठाम-ठाम चभच्चा
खुनने अछि बीयरि
दू गोट समानान्तर स्फटिक प्राचीर
मध्य मे निकलैत
पोठी माछक मुँह सँ बुलबुला
अग्रभाग मे अवस्थित शक्ति-पुंजक प्रतीक
भग्न स्तूप
आगि पाथर आ बिहारि कें पजिऔने
क्रांतिक स्फुलिंग कें सप्तपर्णी जकाँ छिड़िऔने
ब्रह्माणी नदीक ई जल धन्य थिक...धन्य थिक...

बड़ नीक लगैछ
प्रकम्पित ओष्ठ चुम्बनक हेतु उताहुल
नव-नव अनुभव सँ आकुल-व्याकुल हृदयक धुकधुकी
सुनना जाइछ कखन सँ स्पष्ट
एक चिर परिचित स्वर
श्रुति-मधुर
शोर पाड़ैत तन-विचुम्बित उर्मि
ढेहु पर ढेहु हल्ला करैत
तट पर ठाढ़ झौआक वन सनसनाइत
लाल टहटह फूलक लेटाइत आँचर
आलिंगनक हेतु पसारने बाँहि
सरसराइत साड़ी
फड़फड़ाइत पोथीक पन्ना
कएक साल बाद पढ़ल पुस्तक कें पुनि पढ़ब

नव कनियाँक हाथक भोजनक स्वाद
आमंत्रण पर आमंत्रण
अलता रंगक नूआ मे आवृत्त भैरवीक ओ विशाल काया
अभिमंत्रित चक्र-पूजा

पंचमकारक सरंजाम
राजनगरक कारी-स्याह प्रस्थरक मूर्ति तरासल
जोड़ा पोखरि
शीलभंग कुमारि कन्या आ वात्स्यायन केँ लज्जित करैत ओ आँखि...
घुरि अयबाक कनखी
सिहकति बसात मे तरलाइत मादक गंधक फुहारा
ब्रह्माणी नदीक ई जल धन्य थिक...धन्य थिक...

महरानी सँ मेहतरनी धरिक यात्रा
डगमगाइत नाव मे ठेहुन रोपबाक उतकीर्णा
लाल महफाक ओहार हटयबाक धृष्टता
नरक आ देवलोक सनक मिथक केँ तोड़बाक प्रयास
नदी-नाला
डाबर-खत्ता
पार करैत वज्राहत पयर मेला मे घुमैत
बाइसकोप देखैत
कचड़ी-मुरहीक संग ठर्रा उड़बैत
चिखनाक स्वाद लैत
रॉक एण्ड रॉल करैत स्पेशल चाइनिज जुत्ता
आँखि गुम्हराबैत बाप
अलशेसियन कुत्ता
देह केँ चटैत भुतिआयल नदीक हिलकोर जकाँ
सत्यक खोज मे निकलल अमेरिकन बाला
साकीबार मे बैसल
श्वेताम्बरा
छाती पर झुलैत रुद्राक्षक माला
अर्ध दिगम्बरा
तरहरा मे बन्द
घामे-पसीने नहाइत
पुरुष यौनकर्मी सँ बतिआइत इष्ट-मित्रक संग
उसनल अल्हुआ जकाँ पिस्ता-पिस्ता होइत स्त्रीलिंग-पुलिंग
लतखुरदनि होइत पेना देला उत्तर



मेंहक चारू कात घुरैत
कड़ाम मे बान्हल बरदक खूर सँ दाउन होइत लोक
हड़कम्प कटैत
पुलिसक हाथें पकरयबाक भय
स्मरण मे अबैत छथि
थर-थर कँपैत योजना बिहारी अजय-विजय
मोन पड़ैछ
श्याम वर्ण ब्राह्मणीक डोका सन-सन आँखि
मुखमंडल पर अल्फा-गामा किरिन खेलाइत
खपड़ा छाड़ल घर
माटि छछारल देवाल पर अंकित तिलिया-फुलिया
नयना जोगिन
कामरू कामख्या
केबाड़ पर स्वस्तिक चिह्न
कोनो अहिबातीक हाथक छाप शुभ-लाभ
पिठार सँ पाड़ल विलक्षण अरिपन
छहछह करैत देह-यष्टि
अब्याहत सौन्दर्य-माया
खाली लबनी सन औंघड़ायल नारी-काया
नेपाली दम्पतिक आवास
मुँहथरि पर ठाढ़ रमखेलौना खबास
समतोला दुधिया आ सोंफिया सँ भरल गिलास
महरै गाबैत
भगतइ खेलाइत कोनो धामिक टहंकार
पमरियाक तेसरक ललकार
उक्खड़ि मे समधानल समाठक चोट
ताबर-तोर
चिर्री-चिर्री भेल टाइट वस्त्र
निरस्त सभ अस्त्र-शस्त्र
अनेकहु खण्डित बिम्ब
टहाटही इजोरिया
धानक खेत आ ताहि मे उठैत बिड़रो...

मालगाड़ीक धक्का आ गरमाइत इंजिन
हँसीक ठहक्का
जुआयल धामिन आ द्राक्षासव कें बाँटैत रजकीक कँपैत हाथ
तुरंतीक बेसम्हार देह
अनेकहुँ स्मृति...जीवनक कोलाज...
अपूर्व अनन्य चित्र सभक प्रदर्शनी
—पिता पर पुत्रीक उठल हाथ धन्य थिक...
पितामहक विरुद्ध नेनाक फूटल कंठ धन्य थिक
बाट छेकने पुरनकाक विरुद्ध नवकाक उठल डेग धन्य थिक
ब्रह्माणी नदीक ई जल धन्य थिक...धन्य थिक...



## एक टा छल गाम हमर

परंच नहि भेटैछ तकलो उत्तर कतहु
रमनगर अपन ओ घराड़ी
सौंसे गाम घुरलो सन्ता नहि भेटैछ कोनो इष्ट-मित्र
नीमक ओ दंतार गाछ भैरब बाबाक पीपर आ सटले ठाढ़ बकाइन
मखनाहा डबरा
धुनी रमौने पोखरिक भीड़ पर गाजा धुकैत जटा-जूट बाबा
बम-बम करैत भोलेनाथक भक्त नचारी टेरैत
नीलकंठक प्रात:दर्शन—सभ निपत्ता भए गेल
विषहरा थान कतए गेल?
हारल नटुवा जकाँ झिटुका बिछैत हवेली
रक्षाक नाम पर लाहेब करैत सरकारी कचहरी
बरहत्था बिछा सिरिस्ता लिखैत गेना लाल पटवारी
लोकक गला छोपबाक ब्योंत मे अपस्याँत एक दिस गुरु गोसांइ
दोसर दिस मडुआ बाग लगैत सब कें अनसोहाँत
नवतुरिया सभक ओ अखाड़ा राजा ठाकुर आ इसराइलक जोड़ा
स'रो खेलाइत रमचनरा आ भूने पहलवान
पुस्तकालय कीर्त्तन-भवन पोस्ट आफिस फुटबॉलक मैदान
रमखेलिया आ जालिम सिंहक नाच
कमला कातक मेला मे मुरही-कचड़ीक स्वाद
बाइसकोप ताशक पत्ता
जादूक खेला
करमान लागल लोक स्त्री-पुरुष धिया-पुताक रेलम-पेला
होलीक अबीर मालपूआ ठंढ़इ जूड़शीतलक थाल
गोबर-कादो मे नहाइत धोती गंजी नूआ-सभ अलोपित भए गेल

एक टा छल हमर गाम से कतहु बिला गेल...।

लोक मे आपकता सहयोगिताक अभाव
भाषा-बोली अतिक्रमित नोनछराइन
कतए गेल जट-जटिन सामा-चकेबा
झिझिया बटगबनी मल्हार
भए गेल भत्त्थन गामक सभ टा इनार
फूसक घर बाड़ी झाड़ी
घास-पात आ करची सँ बेढ़ल टाट
बाँसक झाँझन
आ ताहि पर लतरल तिलकोरक लत्ती जँह-तँह
लटकल सजमनि
फुलायल कदीमा बाड़ी मे आलू पियाउज लहसुन खम्हाउर
खजूर जिलेबी केराक घौर
सहिजन-मुनिगा कटहर लताम
गाछी मे पथार लागल जाम
पोखरि मे माछ मखान आ भीड़ पर पान
लुप्त होइत लम्बा-चौड़ा धूआवला लोकक प्रजाति
ढील भेल किंचित
जाति-पातिक बन्धन किनसाइत
जोरनक लेल अँगने-अँगने छिछिआइत लाल काकी हिनहिनाइत घोड़ा
थिरायल महींस कैँ
बहयबाक लेल फिरीसान बौका दुसाध टाँग उठा कए लग्घी करैत गदहा
चुकड़ैत पड़रू बान्हल
थन सँ खसबैत दूध गुजराती भैंस नेढ़ लागल कुकुर पर ढेप फेकैत अगत्ती छौंड़ा
गोठुल्ला मे राखल अल्हुआ
मड़ुआक ढेसरि ढाकीक ढाकी
चीरल जारनिक टाल
आँगन मे धानक पथार
कौआ-बगड़ा कैँ बझयबाक लेल पसारल गेल जाल
ढेकी-जाँत
उक्खड़ि-समाठ



पेटक लेल सूत कटैत टाकु
दिन-राति चलैत चरखा
जोलहाक हाथक बूनल गमछा
ढोल-पिपहीक मधुर स्वर
सिंगा-धुतहू
कतए गेल ठेहुन कैँ छुबैत केश-राशि
फुफकार मारैत पीठ पर जुट्टी
कानक अनार
गालक गुलाब
गितगाइन सभक धुमसाइर
उच्च स्वर मे कविता पाठ करैत भाँट
मड़वा पर नचैत पमरिया
दुर्वा-अक्षतक सस्वर मंत्रोच्चार करैत नैष्ठिक ब्राह्मण
भोज-भातक लेल खुनल गेल अहरी मे धधकैत आगि
हकारल लोक सभक दरबज्जा पर बड़का हुलि-मालि
ई जावन्तो वस्तु-जात कतए चलि गेल
एक टा छल हमर गाम से कतहु बिला गेल...

हेरायल-भुतिआयल लोकाचार
विध-व्यवाहर
सभ्यता-संस्कृति
गामक सभ टा बग्गे-बानि अनचिन्हार
गाम पर शहरक अत्याचार
शरबत पर कोको कोलाक प्रहार
फूसक घर पर कोठाक अत्याचार
अँगने-अँगने
दूरदर्शनक बाँस आ ताहि मे झुलैत एनटीनाक तार
खेत मे सड़कक काते-काते
बिजलीक खम्ह आ ताहि पर
प्रेमालाप करैत हेंजक हेंज चिड़ै-चुनमुनी
बालिका विद्यालय अस्पताल पंचाइत घर महाविद्यालय-भवन
चौबटिया पर छोट-छिन बजार

भिनसर-साँझ
नवतुरियाक मेला
कतहु हँसी-ठहक्का कतहु महा झमेला
बसक प्रतीक्षा मे ठाढ़ स्त्री-पुरुष
सजल-धलज नेना-भुटका
चढ़निहार सँ चढ़ौनिहारक संख्या बेसी
कंडक्टर पर अनेरे
गामक लोक बघाड़ैत शेखी
बसक छत पर
भूत बनल बैसल लोक मोटा-चोटा पंक्चर भेल साइकिल
दुर्दान्त साहस विवशताक मारल
गामहि मे उपलब्ध 'कंडोम'
गर्भ-निरोधक 'पिल्स' नसबन्दीक इंतजाम
आधुनिक जीवनक सगरो साधन—टेलीफोन मोबाइल्स
बिजलीक सभ टा समान फिल्मी गीतक अनघोल
धूम मचौने लाउडस्पीकर
खेत कें जोतैत ट्रैक्टर सड़क पर ईंटा बिछबैत मजदूर
घामे-पसीने नहायल ईंटक भट्ठी सँ निकलैत धुआँ
जिन्स पैंटक आगाँ लज्जित-सकुचाइत नूआँ
कतए गेल ओ गाम
रहैत छलहुँ हम कहियो जाहि ठाम
कतए गेल मंत्र सँ साँपक विष उतारैत बाटी चलबैत मांत्रिक
भूत-प्रेत भगबैत लोक कें ठगैत महातांत्रिक
कतए गेल जोड़ा बरद लगहरि महींस गोली गायक बकेन दूध
भुटिया छौंड़ा ताजी कुत्ता
जुरमाना मे गरीब-गुरवा कें पिटबाक लेल
दलानक चार मे खोंसल जुत्ता
ई कोठा ई 'टाटा सूमो' ककर?
अनचिन्हार भए गेल छी हम एतुक्का लोकक लेल 'एलिनेटेड'
परिचय देमए पड़ैछ नवतूरक लोक कें अप्पन सहजे-सहजे
पहिलुका सभ किछु अलोपित भए गेल
एक टा छल हमर गाम जे कतहु बिला गेल...।



जड़कला मे घूर तर बैसल लोक
कबाइत करैत धिया-पुताक पलटन
बचिया सभक कनियाँ-पुतरा
गप्प-सड़क्का
पिहकारी पर पिहकारी
शतरंजक ओ खेल
ताश-चौपड़ि
अक्खो-बक्खो
अधखोइ-बधखोइ करैत
कौचर्य मे प्रवीण किछु ढेपा फेकबा मे निष्णात
घरे-घरे घुरैत छुतहरनी
सासु-पुतहु मे झगड़ा लगबैत बिढ़नी
खचाखच भरल गामक कचहरी
मालिकक दलान पंचैती करैत
जुरमाना ठोकैत धनी झा रुदल यादव आ भोला पासवान
छोटकाक माइनजन बड़काक मुँह-कान
कतए गेल पतियानी मे ठाढ़ कएक गोट बखाड़ी आकाश छुबैत पुआरक टाल
सुक-सुकराती
दीया-बाती बच्चा सभक हुक्का-लोली
भोरे-भोर सूप पिटैत चाची दाइ दरिद्रा भगबैत लक्ष्मी कें बजबैत
अधबयसू जनी-जातिक बैसार चुल्हा-कात
कोहा मे बरकैत भात
तब पर सेकाइत जन-बोनिहारक लेल मड़ुआ-मकैयक रोटी
नोन-मिरचाइ
बौआक लेल गहूमक सोहारी आमक अचार
धानक उसनाइ
लावा भुजाइ
चूड़ा कुटनाइ
घर-आँगनक होइत सफाइ
चौकी-केवाड़ ठीक करैत लोहार धोबिन दैत
कपड़ाक हिसाब

सोनार माँगैत गहना-गढ़ाइ हजाम माँगैत
दाढ़ी-बनाइ बाबरी-छटाइ
मेघडम्बर लेने ठाढ़ जोगेसराक माय माटिक बर्तनक लगौने बजार
अँगना मे कुम्हार
एक मुट्ठी अन्नक लेल खेखनिया करैत भिखारि
घरबैया सँ सुनैत गंजनि-गारि
खवासनिक हाथ मे चमकैत लहठी गरा मे हार
मालिक जकाँ बैसल कुर्सी पर
ओकर भतार भूखे-पियासे लोहछैत घरबासिन संध्या काल
आँगन मे अरिपन दैत बौआसिन तुलसीचौरा लग
धूप-दीप लेसैत कनियाँ घरे-घरे
दीप देखबैत सुकन्या
नहि ओ घर रहल नहि ओ साङह सरकार भेल बौक
व्यवस्था भेल नाङर विलायल भूमि-चेतना सांस्कृतिक अवदान
कतए हेरायल जातीय अभिमान
पूजी बजार आ साम्राज्यवादक वर्चस्व
लूटि रहल दुनू हाथें
हमर भाषा हमर संस्कृति हमर सर्वस्व
परिवर्तन जीवन भेल गतिये भेल प्राण विकास जे देखैत छी
सएह भेल प्रमाण
धन्य हमर जन्मभूमि
धन्य हमर ग्राम
अर्पित शत वन्दन नमन प्रणाम...।



## अबंड जकाँ बौआइत

अबंड जकाँ बौआइत हजारक हजार
सुसज्जित पंडाल मे
भरि राति
दुर्गा पूजाक लाथे
हेंजक हेंज छही माछ जकाँ
चमकैत-दमकैत
छौंड़ा-छौंड़ी सभक अनियंत्रित भीड़
नरहेर-नरहेरनी सभक रेलम-पेल
तँ ककरहु वक्ष पर हिमालय
तँ ककरहु माथ पर शिवलिंग
आ चिड़ै-चुनमुनीक नीड़
नवालय
मचबैत धमाचौकड़ी
फैशन-प्रदर्शनी कें करैत लज्जित
नव-नव वस्त्राभूषण सँ
सज्जित
ककरहु नूआ मे मिथिला आर्ट्सक चित्रकारी
तँ कोनो दोकान मे
मधुबनी पेंटिंग्स किनबाक लेल मारा-मारी
कियो लुल्ला आ सव्यसाची कें दैत 'चैलेंज'
देखना जाइछ युवा-वर्ग मे
सर्वथा एक नवीन 'क्रेज'
माथ पर उठौने भीड़
कतहु धोनीक 'डुपलिकेट'

कतहु गाहीक गाही प्रियदर्शनी
घटबैत प्रियंका आ करीनाक रेट
दृश्यावलोकन करैत
हँसैत मुस्काइत ड्यूटी पर तैनात
पुलिस अफसर
आतंकवादीक आशंका मे
खतराक भिसिल बजबैत आला कमांडर
अवसर-बेअवसर
अतुल्य भारतक अनुसंधान
'यंग इंडिया'क नव निर्माण...

कतहु देखना जाइछ
फुटपाथी दोकान पर अड्डा मारैत
टंडैली करैत
चाहक चुस्की लैत
व्यवस्थाक विरुद्ध हस्ताक्षर करैत
बुद्धिजीवी वर्ग
बहस बहस आ बहस—यैह भेल
हिनका लोकनिक स्वर्ग
देशक नव सँ नव समस्या पर
वाद-विवाद करैत लोक
अगल-बगल की भए रहल छै
नहि छै कनियो ककरो
तकर चिंता वा शोक
मुख्य विषय भेल :
अमेरिकाक दादागिरी
चीनक सीमा-अतिक्रमण
नंदीग्राम आ सिंगूर मे
किसानक जमीनक अधिग्रहण
सुदूर पूर्व मे क्रांतिक भड़कैत ज्वाला
कश्मीर मे रहि-रहि कए
आतंकवादीक हमला



पाकिस्तान सँ जाली नोटक आक्रमण
परमाणु क्षेत्र मे
विश्व-मंच पर पहुँचबाक संक्रमण
हठात आएल मूल्य-वृद्धि पर
सरकारक मौन-धारण
नहि छै जन सामान्यक आक्रोश
अनेरे-अकारण
मचल अछि गरमा-गरम
बहसा-बहसी
मारा-मारी
फुटपाथ पर महाभारत
देवासुर युद्ध
कुरुक्षेत्र के सरंजाम
पुलिस आ जनता मे मचल संग्राम
त्राहि-त्राहि करैत लोक
सौंसे सड़क भेल जाम...

विद्युत-प्रकाश मे झकझक करैत
महानगर
नियोन लाइट मे चमचम करैत
डगर-डगर
इन्द्रधनुषी रंग मे रंगल
गवाक्ष आ वातायन
हुलकी दैत एक फाँक आँखि आ आनन
दिन भेल नतमस्तक रातिक आगाँ
नहि छलै कोनो उपाय
कतबो होउक विज्ञानक उन्नति
कालक समक्ष सभ अछि निरुपाय
रातुक बाजि गेल बारह
टनटना उठल
गिरजाघरक घड़ी-घंटा
सतर्क भेल पुलिस

हाथ मे लेलक बंदूक आ डंटा
जन-समुद्रक उठि रहल
ढेहु पर ढेहु
आबाल-वृद्ध-नर-नारीक
उच्छल उद्दाम ऊर्मि
अग्रसर होइत नव ऊर्जाक संग
आनन्दोल्लास मे मग्न जनसमूहक वितान
गबैत गीत
करैत नृत्य नि:शंक
कि हठात भए जाइछ बिजली फेल
औ बाबू अन्हेर भए गेल
अन्हार घर साँपे-साँप
नहि छै लोक-दु:खक सीमा
कष्टक माप
हाहाकार मचि जाइछ
प्रतिरक्षाक विपरीत
प्रतिबद्धताक नहि भीत
कार्य-विपर्यय सँ कोहराम मचि जाइछ
महिला लोकनिक आर्त्तनाद
नेन्ना सभक चीत्कार
डूबि जाइछ ब्लैक होल मे दक्षिण कलकत्ता
पुलिस भेल निपत्ता
आनंद नाटकक होइछ एवं विधि पटाक्षेप
कर्टेन रेजर
निमू जनताक ऊपर बुलडोजर
प्रात: अखबार मे लोक पढ़ैछ—
ई छल आतंकवादीक हस्तक्षेप...



## मैथिलि बरनी

**[ एक ]**
एतेक दिनुका बाद
भेटलहुँ अहाँ
भए गेल
सूप सनक करेज

**[ दू ]**
केरा गाछ सँ
उड़ल खंजन
थरथराएल पात
पुनि शांत भए गेल।

**[ तीन ]**
जल जे अहाँ पियाओल
बड़ छल मीठ
तड़ास तँ भेल शांत
मोन नहि भेल तृप्त।

**[ चारि ]**
ठाढ़ गाछ कंकाल
झड़ि गेल पात
दए रहल हुलकी कनोजड़ि
वसन्त अयबा मे विलम्बहि कतेक?

[ पाँच ]
खूब खसल अछि पाथर
पाव-पाव भरि के
रबी-राइ ओ गाछ-बिरिछ भेल नष्ट
नङ-धरङ छथि ठाढ़ दिगम्बर।

[ छओ ]
फुलायल बाट पर
कदम्ब अनेकहु वर्ष पर
हर्षित-प्रफुल्लित भए रहल अछि लोक
नेना केर जन्म-दिन पर

[ सात ]
पीपरक ई गाछ
चिड़ै-चुनमुनीक आवास
थाकल-ठेहिआयल बटोहीक लेल प्राण
जमिंदारक अत्याचार सँ मुक्त भेल हो कोनो दास

[ आठ ]
बहि रहल अछि धार
कोटि-कोटि लोकक कए रहल उद्धार
शहर भरि केर गंदगी केँ कए रहल अछि दूर
राजनगरक काली केर गरदनि मे जेना चानीक हार

[ नओ ]
नीम केर ई गाछ
अक्कत तीत तकर फड़ फूल ओ पात
आर्ष-वचन सन जीवन-प्रद अछि ठाढ़
मूल डारि ओ छाल तपस्या-रत ऋषी अपस्यात



[ दस ]
सतभैयाँ सन पाम वृक्ष अछि ठाढ़
पतियानी मे अदौकाल सँ
बाँटि रहल उल्लास निरन्तर रौद बसात पानि अन्हर मे
बता रहल अछि कोनो नवाबक कथा मनोहर मोन सँ

[ एगारह ]
साँप सनक ई सीढ़ी अति प्राचीन
कहैए कथा कोनो जेबुन्निसा केर नेप चुआबति बेगम सभहिक
चक्करदार देबाल पर अंकित चित्र अनेकहु नारी-देहक
शब्दकोश अश्लील कहैए गौरव-गाथा वर्तमान केर।

# महानायकक अरण्य-यात्रा

हमर एहि विशाल लोकतांत्रित देश मे विश्वक महत्त्वपूर्ण गणतंत्र मे
अर्द्ध शताब्दीक पश्चात
प्रारम्भ भए गेल अछि पुन: समाज आ बजारक बीच
देवासुर संग्राम
विदेसी आक्रमणक पदचाप
विभिन्न मुद्रा आ गति मे
आकर्षक तामझाम आ चिक-चाक्य मे
जोर-शोर सँ भए रहल अछि मिथ्या प्रगतिक नाम पर
प्रचारक काज सरकारी डिगडिगियाक संग अफवाह पसारबा मे व्यस्त
फूसि बँटबा मे अपस्याँत
संचार-तंत्र कोनो निर्लज्ज माउग जकाँ उघारने ढीढ़
असर्ध सँ असर्ध क्रिया-कलापक कए रहल प्रदर्शन
सत्यक नाम पर अश्लीलताक सीमा-अतिक्रमण
अंग-प्रदर्शनक व्यस्ततम सेशन
आ ताहि मध्य विदेशी कम्पनी सभक महाजाल
माथ पर झुलैत ससरफानी
फँसि जाइछ पोठी-इचना जाल मे कौखन
मुदा जाल फाड़ि फानि जाइछ बड़का-बड़का रहु, भाकुर आ बुआर
दोहाइ सरकार
भारत बनि गेल अछि विश्वक सभ सँ बड़का हाट
मछुआ बजार
पूजी-निवेशक भूमि
मुनाफाक महाविन्दु
आकर्षणक केन्द्र



आ समाज-बजारक बीच भए रहल मल-युद्ध
महानायक देखना जाइछ क्रुद्ध
किछु देश दर्शक बनि थपड़ी पीटि रहल
पड़ोसिया केँ पीठ ठोकि महो-महो भए रहल

भुक्खल शेर अछि बजार
भक्षणक हेतु हड़का देल गेल अछि माल-जाल जकाँ हेंजक हेंज
मनुक्ख केँ
मजदूर वर्ग केँ ओकरा आगाँ
भकसी झोंकि देल गेल अछि सड़कक काते-कात
देखना जाइछ ठेलाक हिमालय आ रिक्शाक विंध्याचल
रौदी मे पपड़िआयल खेत जकाँ जनी-जातिक ठोर
देसी कारखाना सभ मे लटकल ताला
करोड़हु हाथ भेल निष्क्रिय
भूख सँ सुबकैत धिया-पुता आ मायक सुक्खल छाती सँ
मूड़ी रगड़ैत ननकिरबा
सौंसे घर उड़ि रहल इमपोर्टेड सनकिरबा
विलहल जाइछ सड़क-चौराहा
गोपनीय वस्तुक पर्चा
घर-बाहर सभतरि छै आतंकवादक चर्चा
बम विस्फोट
सुरक्षाकर्मीक विफलता
चुनाव अभियान मे निकलल देखल जाइछ मंत्री जीक ग'र मे
विशाल माला
मुँह मे पान-मशाला
निर्लज्जताक नाटक 'ओपेरा'
एक संग भए रहल जंगल मे
रामलीला आ 'एब्सर्ड ड्रामा' फासीवादक स्वागत मे
आ महानायकक आगाँ मे
रंग-विरंगक भोज्य पदार्थ सँ भरल थारी केँ
परसि कए राखि देल गेल अछि
बड़का पलाश मे साँठल गेल अछि संस्कृति

तिलकोरक तरुआ
आ छोटका-छोटका छिपली मे विविध समाजक छप्पन भोग
मूलभूत पूजिए केँ उसरैग देल गेल अछि ओकरा उपर
शासन आ बजार
मिलि कए भए गेल अछि एकम-एक
लोक भए गेल अछि सकदम्म कोनो बाँझ मौगी जकाँ
भितरे-भीतर सुखाइत चल जा रहल जनतंत्र बिसुखल महींस जकाँ
तरे-तर जिमड़क पाँगल ठारि जकाँ
मौलयबाक प्रक्रिया मे बुद्धिजीवि
नहि जानि किएक व्यवस्थाक संग समझौता मे व्यस्त
स्तवन लिखबाक व्योंत मे न्यस्त
ऑफिस जयबाक समय
धड़फड़ी मे दाढ़ी बनयबा खन
ब्लेड सँ दकचल गाल केँ बेरि-बेरि पोछैत
अनेरे स्त्री पर बमकैत हमर बाबू भैयाक वर्ग
सम्पूर्ण तंत्रक एक टा अवांछित 'टूल' बनि कए रहि गेल अछि विपक्षी दल
देखि रहल टकटक
कतहु कोनो विरोधक स्वर नहि सुनल जाइछ
कॉमरेड मौन
आ संसद मे चुपचाप बिल पास भए जाइछ एकताक नाम
बढ़ि जाइछ डिजल पेट्रोलक दाम

आइ बिजली सड़क ट्रांसपोर्ट
हवाई अड्डा संचार मीडिया जलापूर्ति
बैंक इंश्योरेंस होटल अस्पताल
खदान प्रतिरक्षा शिक्षा—सभ क्षेत्र मे
विदेशी निवेशक लेल फोलि देल गेल अछि मार्ग
किंवा फोलबाक नियार मे लागल अछि सरकार
झालि बजा रहल शासन-तंत्र
बिलहल जा रहल बोतल मे माहुर
अंधविश्वासक नौटंकी पुनः भए गेल अछि प्रारम्भ
दूरदर्शन पर



प्रसारित कएल जाइछ भूत-प्रेतक खेल
मूर्तिक चमत्कार
मंत्र तंत्र यंत्र
हजारहु वर्षक प्रगति धोअल-पोछल जा रहल
वर्तमान केँ खाधि मे गाड़बाक प्रयास
भविष्यक लेल सौरा खुनबाक समायोजन
निर्वाचन

मौसम अयला पर धर्म निरपेक्षताक गोहारि
भाषण पर भाषण दए रहलि गोरनारि
महिला आरक्षण बिल
कौखन हिन्दुत्वक बिहारि
तँ कौखन वंदेमातरम केर चक्र-चालि
बोट बैंकक सुरक्षा लेल
गर्हित सँ गर्हित काज करबाक लेल
प्रस्तुत शासन-तंत्र
भ्रूणहत्याक षडयंत्र
आ एहि सभक पाछाँ बजारू ऑक्टोपस करैत रहल अछि काज
आस्ते-आस्ते विकलांग भए रहल लोक-वेद सर-समाज
नहि छै ककरो बुझल एकर दूरगामी परिणाम
बजारवाद अछि अमेरिकन अनुकम्पा
भारतक नाम
　　　　से जे होउक आब बदलि रहल अछि समय-साल
　　　　लोक नहि रहल बोतो
　　　　भए गेल अछि ओ अनुभवी होशियार
कि उर्ध्वमुखी भेल अछि जन-चेतना
तंद्रा-भंगक आभास
कि आब नहि छै संभव वंशीवट मे शिकार खेलब
कि दोसराक कान्ह पर बन्दूक राखि गोली चलायब
कि बजार भाव उतरि रहल अछि
चमकी मलिन पड़ल अछि
कि आब नहि छै संभव...नहि छै...

# शाइन इंडिया

औद्योगीकरणक क्रांति मे
उपभोक्तावादी संस्कृतिक बजार मे
भूमंडलीकरणक लाभ
जनता जनार्दन केँ नहि
गरीब गुरबा केँ नहि
मात्र सफेदपोश लोकसभ केँ छै उपलब्ध
निम्न वर्गक लोढ़ी सँ
लिखल छै प्रारब्ध
मालामाल भए रहल
पूजीपति उद्योगपति व्यापारी
नव धनाढ्य वर्ग
कुशल कर्मचारी
बाकी देश गुज्ज अन्हार मे डूबल
इजोतक संधान मे
हथोड़िया दए रहल किछु करबाक लेल
कसमसाइत
सुनगैत जठराग्नि
अन्हर-बिहाड़िक पूर्व शांतिक व्याप्ति
धधरा देखल जाइछ यत्र-तत्र धधकि रहल
दावाग्नि
सुनियोजित बम-विस्फोट
मानव-बमक संचरण
आतंकवादक हड़कंप
अराजकताक साम्राज्य भारत स्वयं बिका रहल



अमेरिकाक हाथ
बुशक कोन दोष
हमर अपनहि अछि बगदल माथ

शाइन इंडिया तँ थिक मात्र एक नारा
चकदे इंडिया एक मुहाबिरा
नव इंडियाक निमार्ण मे अपस्याँत एक विशेष वर्ग
देल जाइछ राति-दिन
नव-नव तर्क : एक सँ एक सपना बाँटल जा रहल
स्वर्ग जयबाक सीढ़ी आ कल्पना रंगीन
उपर झँपकी
साँप-सीढ़ीक खेल देखाओल जा रहल
नव इंडियाक लोक दए रहलैए सरकारक साथ
कायम रखने छै सामंतवादी व्यवस्था केँ
घमंडक संग जेबी मे रखने हाथ
उठयबाक लेल अधिकाधिक लाभ
शुभक करैत तर्पण चौरासी कोटि लोकक पेट पर
मारैत लात नित नव-नव घोषणा सिद्धांत
आ विज्ञापनक भरमार
बनौने मध्यम वर्ग केँ दासानुदास जीबाक लेल
मजबूरी छै
धिया-पुताक रक्षा लेल
नाङरि डोलायब जरूरी छै
'रिमोट कंट्रोल' छै ओकरहि सभक पास
कखनो-कखनो बाँटल जाइछ हेलीकाप्टर सँ
हरियर-हरियर घास
नव-नव पर्चा एक साथ :
नव इंडिया
काहिल आ जाहिल लोकक लेल नहि
भुक्खड़ नाङट आ कंगाल लेल नहि
ओ एक हजार अरबपतिक लेल छै
ओ मुट्ठी भरि

कुशल चतुर आ साहसी लोकक थिकै
बाकी जाअओ भाँड़ मे
ओकरा लोकतांत्रिक देश मे जीबाक अधिकार नहि
गरीब कैँ उठबाक कोनो हक नहि—
एहि नव इंडिया मे
किछु खरबपतिक एहि देश मे!



## शंकराचार्य

कोटि-कोटि हाथ अछि निरुपाय
भए रहल सकदम अनेरे लोक
खाल ओढ़ने बाघ कैँ बुझि सत्य
मचल अछि लोक मे हड़कंप
उठल अछि खूब बिड़रो आर्थिक बिहाड़ि
आइ सगरो देश
अनेरे लोक मे आतंक
भए रहल अछि देश मे दिन-राति
रोजगार विहिन विकास
नहि अछि देखना जाइछ ककरो मुँह पर
किंचितो
हास वा परिहास
नहि छै कोनो काज-धंधा
आइ ककरो पास
गृह-उद्योग भेल बंद नहि छै चाकरी रोजगार
मल्टी नेशनल कंपनी कैँ
देश मे भरमार
वैश्वीकरणक एहि बजार मे 'जंक फुड'क भंडार
रंग-विरंगक वस्तु सभक
लागल अछि सचार
धर्म सभ्यता संस्कृतिक
'हाइ-जैक' भए गेल न्याय-संहिताक नाम पर
धर्म-गुरु कैँ जेल
रोजगार आ कृषिक क्षेत्र मे खूब भेल अछि ह्रास

जन-जन के मुखमंडल पर
अंकित अछि संत्रास

दृश्य-अदृश्य संकट सँ बेढ़ल
आइ हमर ई देश
पूजीवादक ससरफानी मे भए रहल नि:शेष
धूम मचौने अछि आइ सबतरि
मिडिया आ बजार
छिड़कल जाइत अछि आइ सगरो प्रदूषण केर फुहार
कतए नुकायल सूति रहल छथि
आइ देश केर पहरेदार
विचार-संघर्षक एहि मोड़ पर मौन किएक छथि साहित्यकार
कतए गेला शिल्पी रंगकर्मी
कतए पड़यला फिदा हुसैन
कतए बिलयला हमर कामरेड छिनल जाइछ लोकक सुख-चैन
मूल्यक संकट पुनि आएल अछि
आजीविका बनल दु:साध्य
महँगी केँ जे डांग पड़ल अछि दिन काटब आइ भेल असाध्य
वैश्वीकरणक आइ बनल
स्वयं अमेरिका शंकराचार्य
साँढ़ बनल अछि घूमि रहल ओ बनि संसारक आचार्य
आइ जाल मे स्वयं फँसल ओ
मचल त्राहि-त्राहि चहुँओर
अछि अभिमन्यु फँसल व्यूह मे मुक्तिक लेल करैए शोर
एहन अवस्था मे बुद्धिजीवी
युवा सचेत प्रबुद्ध नागरिक एकबद्ध भए कए सकैत छथि
जनोन्मुखी भारतक निर्माण
आओर ओएह सभ दिया सकैत छथि
अइ असुर सँ सब केँ त्राण!



## आहि रे बा! आहि रे बा!!

ई की भेल!
आहि रे बा, आहि रे बा,
बाघक खाल उघरिए गेल!
बहुत दिन धरि नहि चललैए
झूठक ठाठ कतहु रहलैए?
बहुत रगड़लहुँ इत्र-फुलेल
भितरक गंध भभकिए गेल
झरकल मुँह झपने बरु नीक
बेसी नोनगर नहि होइछ ठीक
साँच कहब तँ लागत तीत
आबहु सम्हरू हे प्रिय मीत!

ई की भेल!
आहि रे बा, आहि रे बा,
आखिर भंडा फुटिए गेल!
की अछि राजनीति कामरेड
किएक भेल छी 'एलो-रेड'?
जातिवाद केँ देल दोहाइ
मार्क्सवाद सँ कयल कमाइ
बुझए नहि देलियै ककरो किन्तु
बाजति रहलहुँ किन्तु-परन्तु
दुर्गा मायक गाओल गीत
नव इतिहास रचल अँह मीत!

ई की भेल!
आहि रे बा, आहि रे बा,
आखिर झूठ पराजित भेल!
भाषाई संकीर्ण विचार
किन्तु कयल अँह खूब प्रचार
बनि डपोरशंख भाषण देल
मजूर-किसान कतए चल गेल?
लेनिन-मार्क्सक जपलहुँ नाम
पूजीपति कें कयल सलाम
दू डेग आगु, एक डेग पाछु
लागल अछि फेर किएक कबाछु!
ई की भेल!
आहि रे बा, अहि रे बा,
आखिर छुतहर फुटिए गेल!



## कर्मकांड

आचरण-उच्चताक मानदंड
व्यक्तित्व ओकर
सौरभ-संभार
मूलाधार—विचार देश केर
जकरा काटि चुकल संसार
यैह कारण
जे पसरल चहुधा
महँगाइ केर शूर्पनखा
घर-घर घूमि रहल अछि रावण
आतंकी अछि
ओकर सखा
भ्रष्टाचारक
महाजाल अछि
दुराचार केर कोन कथा
जनसाधारण
दु:खी त्रस्त अछि
अन्तहीन छै ओकर व्यथा
शिक्षा अछि
इंडस्ट्री बनि गेल
विद्या कें नहि अता-पता
मैकाले जड़ि काटि गेल अछि
सुखा रहल तें वृक्ष-लता

कर्म-फलक सिद्धांत फूसि अछि

कर्मकांड गर्हित अपमान
कर्मक फल
तत्काल
होइत अछि
मिथ्या पूर्व युगक अनुमान
मिथ्या पाप-पुण्य केर नाटक
मिथ्या स्वर्ग
नर्क केर बात
भाग्यपुराण केर रचना टाटक
कयने अछि
बड़का आघात

व्यक्तिनिष्ठ जीवन-दर्शन अछि
हमरा लोकनिक
अति प्राचीन
एकोहम् द्वितीयोनास्ति
अहं अधारित
समताहीन
ध्वस्त करू पाखण्ड अहाँ सब
हे किशोर
हे तरुण जवान
कर्माश्रित नव युग-निर्माणक
शंखनाद सँ
करू आहवान...



## कालचक्र

बड़ सूतल
करू आलस त्याग
कर्मे गंगा
कर्म प्रयाग
बीतल बात
तकर की मोल
वर्तमान अनुपम अनमोल
करू भविष्यक
नव निर्माण : यैह थिक जगतक
सत्य प्रमाण

फूसि
असत्य समय केर चक्र
सोझ ओकर गति
नहि ओ वक्र
मिथ्या भाग्य स्वर्ग आ नर्क
पंडित लोकनिक
मिथ्या तर्क
मिथ्या ओझा मिथ्या तंत्र
सब मिलि रचने अछि षडयंत्र
मिथ्या कालचक्र-सिद्धांत
कयने अछि ई
सब केँ भ्रांत

दस हजार वर्ष सँ सब केँ
पढ़ा रहल अछि
भाग्यक पाठ
अतीतोन्मुखी बनौलक सब केँ
देखबा योग्य
ओकर अछि ठाठ
धनी-गरीब मानव-निर्मित अछि
कर्मकांड गर्हित अपमान
पूर्वजन्म केर फल अछि मिथ्या
फूसि प्रमाणित
अछि अनुमान

धीया-पुता भविष्य देश केर
ओएह गढ़ता
नवका इतिहास
ठोर-ठोर पर हँसी फुलायत
घर-घर पसरत
हास-विलास
युवा तरुण छथि वर्तमान
जिनका पर आश्रित
देशक मान
वृद्ध भेलाह अतीत देश केर
करिऔन हुनक मान-सम्मान
भेल विलम्ब
हर्ज नहि कोनो
ई जीवन थिक
कर्मप्रधान
उचित समय अछि आबि गेल
तें शुभारम्भ करू
नव अभियान...



# अथातो काव्य जिज्ञासा

अहुना कान सँ नहि पेट सँ सुनल जाइछ कविता
कारण रोटी थिक कविता
जीबाक लेल
पहिल शर्त थिक कविता
भाषा थिक ओकर शरीर आ शब्द प्राण
बेकसूर गरीब-गुरबाक
ओकालति करैछ कविता
न्यायालय मे ठाढ़ सत्यक पक्षधरता करैछ
किसानक लेल हरक फार आ
मजदूरक लेल हसुआ-हथौड़ीक काज करैछ
कविता—
कविता सामाजिक खाधि केँ भरि कटोरी बनल खेत केँ
समतल करबाक प्रयास करैछ
उस्सर जमीनक लेल खादक काज करैछ
खेत मे लहलहाइत
हरियर-कंच धान ओ गहूमक सीस थिक कविता
सरिसो फूलक रंग
ओ आमक मजरल गाछ केर सुगन्धि थिक कविता
सामा कौनी ओ मड़ुआक ढेसर आ मकैयक बालि थिक कविता
अदौ काल सँ गरीबाक लेल चाउरक खुद्दी
ओ अमीरक लेल अंगूर थिक कविता
सदा-सर्वदा विपक्ष मे ठाढ़ रहल अछि कविता

कविता जीवनक एकरसता केँ तोड़ैछ
शांत-स्थिर जल मे
पाथरक आघत जकाँ हलचल पैदा करैछ
शांति सँ रहय नहि दैछ ककरो
मूक-वधिर व्यवस्थाक गाल पर
जोरदार थापड़ थिक कविता
अट्टहास करैत शासनक मुँह पर
छिड़कल गेल तेजाब थिक कविता
औंघाइत आ चौलि करैत नेत्री-वर्गक लेल चाबुक होइछ कविता
थाकल-ठेहिआयल लोकक लेल भफाइत चाहक चुस्की थिक कविता
बाबू-भैयाक लेल गरमा गरम एक्स्प्रेसो कॉफी थिक कविता

कविता स्थापित सत्ता आ पूजित असत्यक विरोध करैछ
यथास्थितिवाद पर वज्र प्रहार करैछ
कथनी नहि करनी होइछ कविता—
कविता ऋत नैतिकता आ मनुष्यताक संवाहक होइछ
ओ लोभी मक्कार आ लुच्चा केँ
लबरा-लफंगा केँ
चापलूस धूर्त आ भजार केँ खुलेआम उघार करैछ
निर्लज्ज आ लंठ नेता सँ
लोक केँ सावधान-होशियार करैछ
एतावता
जीवनक लेल रामवाण थिक कविता
मानवीय चेतना केँ प्रवर्धमान करयबला 'ट्रैंक्विलाइजर' थिक कविता
प्रबुद्ध साहित्यकार कलाकार आ बुद्धिजीवीक लेल
'एल.एस.डी.' ओ 'मेरीजुआना' थिक कविता
सोना-रूपाक शीशमहल
ओ अवैध भवन-निर्माणक लेल 'बुलडोजर' होइछ कविता
सुतरांग
ककरहु लेल शृंगार आ वीर रस-प्रवाहिनी
तँ ककरहु लेल कामिनी आ इन्कलाब थिक कविता—



कविता विलास आ मनोरंजनक वस्तु नहि
निर्माण आ पुनर्निर्माणक उत्स थिक कविता
जीवनक पयार्य थिक कविता
एक गोट सक्रिय हस्तक्षेप थिक कविता।

## हिसाब-किताब

देश हमर कयलक अछि निश्चित
आशातीत विकास
विभिन्न क्षेत्र मे संवर्द्धन
पसरल अछि चहुधा हास-विलास
नव भारत-निर्माण मे लागल
व्यस्त करोड़ो हाथ
शासन भने सुँघाबए सुथनी
गर्वोन्नत अछि माथ
विज्ञापन अछि चरम शीश पर
नव-नव आविष्कार
कीर्तिमान स्थापित आइयो
बाँटल जाइए पुरस्कार
प्रादुर्भूत भेल अछि प्रतिभा
सब क्षेत्र मे आइ
यातायातक सुविधा अनुपम
देखना जाइछ भाइ
आवागमनक दिशा मे निश्चित
अनलक अछि नव क्रांति
नवयुग अछि आरम्भ भेल
टूटल अछि पूर्वक भ्रांति

विकासक शिखर आइ आलोकित
नहि कोनो सन्देह
साठि वर्ष मे तीन डेग



चलि सकलाह अछि विदेह
गुणवत्ता आदर्शक दृष्टिएँ
कोन गर्त मे पड़ल देश अछि
से बिलकुल अछि साफ
लाख करू अहाँ खेल-तमाशा
करत नहि जनता माफ
भ्रष्टाचारी गगन-शिखर सँ
गरजि रहल निर्द्वन्द्व
नाचि रहल महँगाइ डाइन
देखा रहल छल-छन्द
निम्न कोटि मे देश परिगणित
तैयो नहि छै फर्क
तेसर शक्तिक उदय भेल अछि
मिडिया केर छै तर्क
सुख-सुविधा केर मृग-तृष्णा मे
लोक अधिक बेचैन
मनोरोग सँ दुःखी-त्रस्त नहि छै
ककरो किछु चैन
अश्लीलता अछि चरम शिखर पर
यौनाचारक नहि अंत
जहलक सजा काटि रहला अछि
बड़का-बड़का संत
बनिया व्यापारी चोर
उचक्का कैँ भेटल छै छूट
पीट रहल चानी सब कियो अछि
आइ मचल छै लूट
विघटनक दिशा मे अग्रसरित अछि
देशक राजनीति
मस्ती मे अछि
भ्रष्ट मुनाफाखोर युवा-दल
कतए गेल रणनीति
नारी-शोषणक की कथा कहू

बरु नहि सूनी से नीक
समय होइछ बलवान
एक दिन भए जायत सब ठीक
हे हमर प्रिय बन्धु पाठक
भूल करब सब माफ
जे देखल से कहल सुनाओल
बात जानी साफ



## एलेक्शन! एलेक्शन!

पाँच वर्ष केर बाद आइ
पुनि बजरल अछि धमगज्जर
पड़ल डंक पर चोट चुनावक
बस वोटक अछि चक्कर

गाम-गाम मे घूमि रहल अछि
रंग-विरंगक वाहन
देखना जाइछ आइ प्रफुल्लित
नेता जी केर आनन
खुश अछि गामक लोक सूनि कए
नेता जी केर भाषण
सस्ता हेतै चाउर आओर
घर-घर केँ भेटतै राशन
मुदा नहि ककरो भए रहलैए
कनियो आइ विश्वास
महँगी के रे सूर्पनखा सँ
फाटल छै आकाश
कतहु ठहक्का छूटि रहल अछि
कतहु बजैए ढोल
आपस मे सब फोलि रहल अछि
एक दोसरा के पोल

कियो पोल्हबैए तन मन धन सँ
दलित वर्ग केँ आइ

एक संग ओ खाइ-पिबैए
बनि कए अप्पन भाइ
कियो गरीब-गुड़बा के घर मे
सूतैए भरि राति
कियो बड़का नेता बनबा लए
भाषण दैए भड़कऊ दिन-राति
मौगियो नहि ककरो सँ पाछा
गारि देबा मे आइ
छूटि रहल शब्दक बमगोला
जहाँ-तहाँ हे माइ
पंचम स्वर मे माइक बजैए
मचल आइ अनघोल
खुलेआम अछि वोट बिकाइत
सय टाका केर मोल

सगर देश आइ भेल प्रदूषित
घर-घर लागल झोल
साँच कहब तँ लागत धक् द'
जहिना कबकब ओल।



## भाषा ठाढ़ बजार मे

भाषा अछि बजार केँ हेतुए
विज्ञापन केर साधन
रचनाक माध्यम नहि अछि ओ
बनि गेल आइ अपावन
तार्किक होइछ बजारक भाषा
शब्दावली मनोहर
अत्याकर्षक ओकर कल्पना
युग केर होइछ धरोहर

खुलेआम सब बिका रहल अछि
आइ बजार अछि गर्म
चाउर-दालि वा नोन-तेल हो
सभक एक्के धर्म
कपड़ा-लत्ता साहित्य-संस्कृति
मुँह केँ झपने लोक—
बिका रहल अछि एहि मंडी मे
नहि छै कनिञो शोक

अस्मिता पर आइ बजार मे
लागि गेल अछि डाक
ओजस्विता स्वाभिमान देश केर
जरि कए भ' गेल खाक
इलेक्ट्रानिक प्रिंट मीडिया
ओकर बनल छै वाहन

क्षण-क्षण रूपान्तरित होइत छै
ओएह छै, ओक्कर साधन

बाल्येवस्था सँ छिना गेलैए
धिया-पुता केर मुँहक वाणी
अंगरेजी के भूतक आगाँ
नञि सुनबै छै दादी-नानी कथा-पिहानी
आधुनिकता केर महा दौड़ मे
'राष्ट्र' शब्द अछि बड़का बाधक
वैश्वीकरणक अन्हर-बिहाड़ि मे
चारू खाना चित्त पड़ल छथि बड़का साधक

आबहु ऊठू हे युवा तुर्क
सब जोहि रहल अछि अहींक बाट
भए सुसंगठित बढ़ू आगाँ
हो भूमिकंप हो छिन्न-भिन्न सब राज-पाट
भाषा शिक्षा आ संस्कृतिक
उद्धार करब अछि अहींक हाथ
नारी केँ ल' कए संग चलू
अछि विजय सुनिश्चित गर्वोन्नत हो दुहुक माथ।



## ओ करत मौज! ओ करत राज!!

लाज-लेहाज त्यागि कए एकदम
नेता सभ भए गेल मक्कार
सगर देश दए रहल गारि आ
बेरि-बेरि धिक्कार
धर्मनिरपेक्षता आइ बनल अछि
पाप छिपयबा केर हथियार
सात खून अछि माफ सदा
जँ छी सत्तादल मे होशियार
मंजिल प्रधानमंत्री केर कुर्सी
देखबाक नहि वाम-दहिन
जय हो जय हो कुल-खानदानक
संसद मे हो भाइ-बहिन
जनता केँ कियो शुभचिन्तक नहि
जे बुझैत अछि ओकरा मूर्ख
ओकर अंत निश्चित अछि मानू
हो किएक नहि बड़का धूर्त
भाषणक अछि निष्कासन भए गेल
कर्म कर्म आ कर्मक मोल
यैह अछि समयक माँग बनल आइ
फूजि रहल अछि सभ केर पोल
देश-हितक जे बात करत
ओ करत मौज ओ करत राज
भारत वर्षक एहि प्रजातंत्र मे
ओकरहि मस्तक पर हेतै ताज

परिवार आ सत्ता आ पइसा अछि ध्येय बनल
हो गत्र-गत्र मे भने दाग
अछि यैह विडम्बना आइ बड़का
ओकरहि माथा पर जेतै पाग।



## सेल! सेल!!

सांसद बिका रहल अछि सस्ता
आजुक हिन्दुस्तान मे
देशक जनता सूति रहल अछि
तेल ढारि कए कान मे

खुलेआम आइ सब किछु होइए
लोकतंत्र के नाम पर
भ्रष्टाचारक धूम मचल अछि
की दिल्ली की गाम पर

ऊपर सँ नीचा सब एक्के
लुटबा केर फिराक मे
लूटि-खसोट मचल अछि सबतरि
सब खयबाक ताक मे

नारी नांगट भेल अछि जमि कए
नव फैशनक नाम पर
महिला आरक्षण लटकल अछि
किछु नेताक मकान पर

नोटक बंडल केर प्रदर्शन
संसद भवनक कक्ष मे
मोल-तोल आ शोर मचल अछि
जमि कए पक्ष-विपक्ष मे

नढ़िया-दल पहुँचल अछि दिल्ली
बाघ-सिंह केर भेष मे
बाहुबली पूजीपति नेता
साढ़ बनल अछि देश मे...



## नेता-पुराण

मंत्री तंत्री नेता चोर,
गली-गली मे भए गेल शोर।

पुलिस दरोगा अफसर भ्रष्ट,
नैतिकता आइ भए गेल नष्ट।

नोट लिअ आ वोट खसाऊ,
यैह अवसर अछि खूब कमाऊ।

घूसक बल पर होइए काज,
रामक नाम पर रावणक राज।

नारी-शोषण बड़ अछि भेल,
विज्ञापन बनि ओ रहि गेल।

उदारीकरणक अवसरवाद,
जनता मरओ हम छी आबाद।

मुँह पर दीअ कने लगाम,
लोक थुकैए अहाँक नाम।

पनही फेकब फैशन भेल,
जूता अछि पूजित भए गेल।

जन केँ नहि बूझू बकलेल,
ओ करत बन्द अन्यायक खेल।

कुर्सी छोड़ू हद भए गेल,
जन-सागर अछि उद्वेलित भेल।



## कविता बिकबा लए तैयार

कविता बिका रहल मंडी मे
सब रंग आ सब साइज के
अबै जाउ, जकरा किनबा हो
देखि सूनि आ भाइज के

खुजल बजार माल अछि फूजल
लइ जाउ सोचि-विचारि कए
सब पर रेट लिखल सरकारी
कीनू देखि-निहारि कए

हिचकेबा के कोनो काज नहि
औ बाबू! हम अपन लोक छी
मीनी कविता मैक्सी कविता
सब भेटत, किए शोक करै छी?

देखि ठाढ़, बजार मे हुनका
किए अहाँ सब भागि रहल छी
समय-साल अछि बदलि गेल
पुनि मुँह किएक सब बाबि रहल छी?

अबै जाउ, कीनू जल्दी सँ
पुलिस एम्हरे आबि रहल अछि
टका निकालू, करू शीघ्रता
सुनू, गजल के गाबि रहल अछि?

औ बाबू सब, करू फैसला
अइ मे हम्मर कोन कसूर
पेटक लेल बेचै छी कविता
नहि माँगै छी भीख हजूर।...



# एक पयर हो सदा माटि पर

कुर्सी पर बैसल छथि कनिया
हजारहु लोकक बीच मे
कतए गेल घोघट आ आँचर
लोक पड़ल अछि शोच मे

टाई-सूट मे वर सजल अछि
अनमन फिल्मी स्टार जकाँ
देल जाइत अछि दुर्वा-अक्षत
गीत टुटल अछि तार जकाँ

फाइव स्टार होटल चमकैए
इन्द्रासन के होइए शंका
अस्सी लाखक मुत्रालय मे
बड़ा कठिन अछि लघुशंका

चुड़ा-दही मे जे सौरभ छल
कतए भेटत 'बूफे' मे भाइ
बूलि-बूलि क' खाउ प्लेट मे
यैह सिस्टम छै प्रचलित आइ

विवाह सँ पहिने 'वर-माला' के
धूम मचल सब ठाम अछि
सोहाग देबा केर कोन प्रयोजन
विध पुरबा के काम अछि

समयक संग चलै जाउ बाबू
यैह नव युग केर माँग अछि
किन्तु ने बिसरू अपन गाम
बोतल-बोतल मे भाँग अछि

एक पयर हो सदा माटि पर
दोसर चलबा लए तैयार
आशा हो संबल जीवन के
रहैत जाउ सब क्यो होशियार



## बीच सड़क पर

बीच सड़क पर ठाढ़ छै आम आदमी आइ
धुआँ उठल छै जोर सँ सुलगि रहल छै आगि

उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम शोर मचल छै भाइ
कुर्सी खाली करू जल्दी मोह-ममता केँ त्यागि

पेट अन्न नहि देह ने लत्ता हाथ पर नहि छै पाइ
महँगाइ सँ धीया-पूता काटि रहल छै काहि

लैहब फिल्मी डांस करै छै चौपट भेल पढ़ाइ
बिजली पानि भेटै नहि ककरो गैंग रेप दिन-राति

युवा-शक्ति देशक छै जागल लेक्चर दैछ कसाइ
जोर-जुलुम नहि चलतै किन्नहु वंशवाद नहि जाति

कारी भेल मुँह कोइला सँ जल्दी करू सफाइ
साँढ़ विदेशी घूमि रहल अछि चौपट करत जजाति

माँग देश केँ छै परिवर्तन बंद कराबू गलत कमाइ
पुरना सिस्टम त्यागू आनू राजनीति मे नव प्रजाति

## डांस! डेमोक्रेसी डांस!

कहि दैत छी बंद करू नंगटइ
नंगा नाच
उत्तेजक दृश्य नग्न प्रदर्शन
सरकारी शक्तिक अपव्यय
अन्यथा
उनटि जाएत राज सिंहासन
ध्वस्त भए जाएत शान-शौकत
वैमनस्यताक खेला
अन्यायक मेला
यौन-शोषणक रेलम-पेला
महँगाई आ भ्रष्टाचारक ठेलम-ठेला
कहिया धरि चलत ई झमेला
कहिया धरि...कहिया धरि...
अन्याय आ अत्याचारक ई सिलसिला?

राजधानीक दिशा मे बढ़ि रहल लोक
जन-समुद्रक आलोड़न-विलोड़न
श्रुति-श्रव्य पद-चाप
क्रुद्ध महिला-वर्ग
उधिया रहल दूध
गरमा रहल युवा रक्त-मांस
डांस! डेमोक्रेसी डांस!



## विकल्प नहि आर कोनो

सगर देश धधकि रहल
जठराग्निक ज्वाला मे
हुकुर-हुकुर कए रहल गरीब-गुरबा
डाँय-डाँय कए रहल धिया-पुता
मुट्ठी भरि लोक केँ छाड़ि
भूख-प्यास सँ छटपटाइत
तीमन लए तरसैत सम्पूर्ण देश

नहि चलि सकैछ राज
किन्हु-किन्हु नहि बढ़ि सकैछ राष्ट्र
वर्णशंकर सरकार सँ
बोक-बहिर दल सँ
कमजोर नेतृत्व सँ
धूर्त चलाक निर्लज्ज लोकनिक परामर्श सँ
व्यवस्था-परिवर्तन आवश्यक
आम जनताक आवाज
परिवारवादक अंत
अपरिहार्य

बिका रहल देश
कारपोरेट समूहक हाथ
अपमान सँ नत शहीदक माथ
महँगीक मारि
लोक तोड़ि रहल बफहारि

भ्रष्टचारक प्रकोप
त्रस्त अछि सम्पूर्ण देशक लोक
आब एक मात्र विकल्प:
गृह-युद्ध
जन-क्रांति
टुटबाक चाही भ्रांति!



## आइ-क्यू

कनैत छै हकन्न
घरक लोक भूखे-पियासे
पेट काटि पढ़बैत छै बच्चा केँ
मुदा कथी लए करतै परबाहि ककरो
बङोरभरि ई सभ
शिक्षक होथि वा प्राचार्य
नहि सुनबा लेल तैयार
किनको हितोपदेश
नीति-कथा वा सदाचार
संचार-युगक प्रभाव-शिष्टाचारक सर्वथा अभाव
नवतुरियाक अवचेतन
भ' गेल छै प्रवर्द्धमान
समय सँ पूर्वहि
भ' गेल छै सभ कथुक ज्ञान
आइ-क्यू परिपक्व
संस्कृति ध्वस्त
आजूक धिया-पुता—शिक्षाक बोझ सँ संत्रस्त
युवा-शक्ति ताकि रहल
दिशा-निर्देशक यंत्र
कर्म कर्म आ कर्म
सैह भेल आजुक मंत्र
यैह थिक युग-धर्म

## पार्टनर

की करबै लए
अहिना होइत छै आइ-काल्हि
उनटा बसात बहल छै
नवताक बिड़रो उठल छै
हे बड़ भेल
समेटू अपन भाभटि
छाती जुनि पीटू
आबो तँ ऊठू
नहि होउ कनियो उदास
छौंड़ा सभ हँसत
लोक करत उपहास
समय बितला पर
सभ किछु भ' जेतै ठीक
यैह पुतहु लागए लगती
अहाँ केँ बड़ नीक
होमए दीयौ शुभ-शुभ क' काज
की भेलै जँ बौआ ल' अनलाह
अमेरिका सँ
कमासुक बेड-पार्टनर
सिमरोवला तँ कयलनि अछि—
डैनिश पुतहु
चलू—दूबि-धान सँ करियौन ग' चुमाओन
एहि मे अछि सभक कल्याण...



## अपन दुलरुआक नाम

आदित्य आनन्द
सर्वानन्द
दीपित दिनेन्द्र
परिवार मे एक
पौत्र-वीरेन्द्र
आलोकित करैछ
जनु पूर्णिमाक चन्द्र
तहिना करथु
भारतीय नभ केँ प्रकाशित
बनि ज्ञान-विज्ञानक केन्द्र
जुग-जुग जीबथु
पाबथु सुनाम
अर्जित करथु
एक संग गुरुजनक आशीर्वचन
यश-प्रतिष्ठा आ धन-धाम...

मात्र डेढ़ बर्खक आयु
घर भरिक लोकक लेल
यथा प्राणवायु
प्रमुदित-प्रफुल्ल मुखारविंद
क्षीर सागर मे प्रस्फुटित भेल हो
यथा अरविंद
गर्वोन्नत ललाट
फुजल हो लक्ष्मीक कृपा-कपाट

नेत्र मे अद्‌भुत चमक
सूर्योदय केर पूर्व धमक
बिनु सिखौने लोक-वेद कैँ करैछ
पयर छूबि प्रणाम
दीर्घ प्रतीक्षाक उपरान्त
सफल मनोरथ पूर्णकाम...



# इनटॉलरेंस

बूढ़-पुरान कहैछ
नवतुरिया भ' गेल छै बोन-बहेड़
बनि गेल छै ई सभ
एकदम नरहेड़
अनेरे ठिठिआइत-खिखिआइत रहत
सभा-सोसाइटी मे
मचौने रहत हुड़दंग
कनफुसकी करैत रहत आपस मे
पहिरने रहत कपड़ा बेदरंग
से जे कहबाक होनि
कहैथ जाउथ ई सभ भरिपोख
गारि-गंजनि दैत जाउथ निर्धोख
सभ शिरोधार्य
अपने लोकनिक बेसाहल कर्ज
भ' गेल अछि चुकायब अनिवार्य
अपने लोकनि कैँ अछि
नव चश्माक बेगरता
हमरा सभ के पास समय के अछि खगता
मुदा नहि सहबनि आब
किन्नहु अन्याय
के करत नव-पुरानक तसफीहा
उच्च-निम्नक न्याय
के भरत मानव-निर्मित
गरीबी-अमीरीक खाधि

के करत तथाकथित धर्मनिर्पेक्षताक फैसला
मोन केँ खूब साधि
हँसबा पर नहि छै लागल
सरकारी टैक्स
देश भरि मे छै पसरल नेट-वेब आ फैक्स
आब नहि सहल जाइछ
श्रेष्ठ लोकनिक अनेरे बिगड़नाइ-डटनाइ
हमरा सभक लेल व्यर्थ मे चिन्ता केनाइ
सए औषधिक एक औषधि छै हँसनाइ...



## बुलेट बन्दूक

धू-धू क' जरि रहल यत्र-तत्र गाम
सुड्डाह अछि भ' रहल
अकूत धन-धाम
आगि लागि गेल छै बोन मे कैए ठाम
हरित वृक्ष जीव-जन्तु
जरि रहल अविराम
आगि केँ मिझेबा मे लागल अछि लोक
संसद अछि मना रहल
लगातार शोक
दमकलक पता नहि
पुलिस अछि निपत्ता
धन्य हमर लोकतंत्र धन्य थिक सत्ता
नेता सभ टाका सँ
भरि रहल सन्दूक
युवावर्ग तानि रहल बुलेट बन्दूक...

## मातृभाषा

धिया-पुताक शिक्षा
भ' गेल अछि बड़का भार
शिक्षा अति महँग
गारजियन लचार
कान्ह पर ढोइत-ढोइत
पुस्तक-कॉपीक पहाड़
हकमि जाइछ नेना-भुटका
दरकि जाइछ हाड़
चलि गेल अंग्रेज
तैयो अछि अंग्रेजी
सभक माथ पर सवार
क्षेत्रीय भाषाक विलुप्तिक षडयंत्र
संस्कृतिक विनाश हेतु
उदारीकरणक महामंत्र
मानत नहि लोक आब
मातृभाषाक रक्षा अपरिहार्य
मातृभाषा मे पढ़ौनी हो
धिया-पुताक लेल अनिवार्य...



## किरायाक मकान

संसार—किरायाक मकान
संसारक लोक—किरायेदार
मकान मालिक—सर्वशक्तिमान
सर्वव्यापक
अंतिम गति
सभक एक समान...

## बजार

भारत एक पैघ बजार
एतुक्का लोक खरीदार
महा उदार
विदेशी कंपनीक भरमार
महाशक्तिक
बजार पर एक मात्र अधिकार
ओकरहि इच्छा पर निर्भर
वस्तु-जातक क्रय-विक्रय
समान किनबाक लेल
हमरा लोकनि छी बाध्य
एकर अतिरिक्त
अछिए कोन आन साध्य...



## वैश्वीकरण

वैश्वीकरणक इतर नाम
भूमंडलीकरण
अफ्रीका सँ घुरि आएल अछि
एकर चरण
अंग्रजी मे कहल जाइत छै
'ग्लोबलाइजेशन'
शहर-गाम धरि पसरि गेल छै
एक्कर फैशन
शिक्षा भाषा संस्कृति सभ केँ
कयने अछि उद्भ्रांत
उद्योग व्यापार ओ काम-काज केँ
कयने अछि आक्रांत
शील स्वभाव नवका पीढ़ी केँ
भए गेल छै अशांत
पहिरब-ओढ़ब ओ खान-पान
परिवर्तित भेल नितांत
एकरा सँ सम्पूर्ण देश अछि
असंतुष्ट आ खिन्न
टुटलैए नहि सरकारक सरिपहु
मोह-माया के निन्न...

वैश्वीकरण भए गेल अछि आइ
साम्राज्यवादक दोसर पर्याय
विदेशी माल केँ बेचबा लए

नहि छै ओकरा लग आर उपाय
खुलेआम भए रहल देश मे
भ्रष्टाचार-रेप-अन्याय
महँगाइ सुरक्षा बनि गेल छै
खर्चा बेसी कम छै आय
अपभोक्तावादी मनोवृत्ति केँ
देल जा रहल खूब बढ़ावा
सम्पूर्ण देश अछि पजरि रहल
जनु कुम्हारक आवा
वैश्वीकरणक संदेश गरल छै
से बुझबा मे आएल आइ
मस्ती मे सब झूमि रहल, ककरो क्यो
सुनै नहि भाइ...

अछि वैश्वीकरण-बजारवाद
नहि छै ककरो मुँह पर विषाद
नहि छै युवती मे आब लाज
नहि करैछ
जेठक लेहाज
युवजन भए गेल छथि भ्रमित, आओर
घर मे रहैत छथि नमित
भाषा संस्कृति केँ नष्ट करब छै एकमात्र
सिद्धांत एकर
उदारीकरणक लाथे ई कयने छल बेस
प्रयास मगर
मुँह भरें खसल तैयो ओकरा नहि छै
गत्र मे लाज तकर
हारल नटुवा झिटुका बीछए—
तकर उदाहरण अछि प्रत्यक्ष
ओ पसरि रहल अछि 'यूथ कलचर'
सभक समक्ष...



संस्कृति केँ उद्योग बना ओ बाँटि रहल
भग्वद्प्रसाद
नाचि-गाबि सभ मटकि रहल आ
पसरि रहल सभतरि प्रमाद
भारतीय भाषा संस्कृति सँ
करबा लए विच्छिन्न
युवावर्ग केँ बना रहल उद्धत उदास
आ खिन्न
आँखि मूनि सब बनि रहला अछि
आइ 'अमेरकनाइज्ड'
भारतवासी केँ बना रहल अछि
आइ ओ 'सिविलाइज्ड'
चलि रहलैए एखनो ओकर
अपन महाअभियान
झुकत माथ नहि हिमगिरि केँ
से सूनि लिअ श्रीमान...

# युग-संदेश

भूतक कथा बहुत सुनौलहुँ वर्तमान केर कथा कहू
बन्दी बनल भविष्य हमर अछि ओकरा सत्वर मुक्त करू

मुट्ठी भरि लोक देश केँ
दुनू हाथें लूटि रहल
अन्ध-बधिर जनता अछि बनल
सभ किछु कलबल भोगि रहल
हद्द भए गेल एहन नहि देखल संसारक इतिहास
उठू एकजुट भए पढ़ू लड़ू चंडाल चौखरिक नाश करू

एहन सहनशील भेला सँ
अपटी खेत मे सभ मरत
अहाँ सभक निकम्मापन केँ
धिया-पुता नहि सहन करत
आनक कान्ह पर बन्दूक रखने काज होएत नहि कने गुनू
अगल-बगल देखू किछु सीखू बढ़ू युग-सन्देश सुनू

वीर-विहीन भेल अछि धरती
अर्जुन भीम वीर आनू
पावर पैसा जमा करू सभ
काज होएत निश्चित मानू
हमर भूमि बंजर नहि सरिपहुँ होएत मनोरथ पूर्ण बुझू।



# टा-टा! बाइ-बाइ!!

तीस पार क' चुकलि अछि मूमू
परुका साल
विवाहक कोनो चर्चा नहि कयलक
जखन पुछलियै ओक्कर हाल
एयरपोर्ट पर जमि क' भेल छल
एहि बेर ओकरा सँ बात
खुलि क' कहलक किछु नहि नुकौलक
सहने छलि जे मुक्का-लात
कहियो होइ छलि कन्या अजग्गि
तँ पीटैत छलाह बाप कपार
किन्तु आइ से बात नहि छै
क' चुकल अछि नारी लक्ष्मण-रेखा पार
समय-साल छै बदलि गेल
भेलैए शिक्षाक प्रसार
नर-नारी मध्य जे भेद छलै
से टूटि रहल छै तार-तार
देखना जाइछ सभ क्षेत्र मे
उच्च शिखर पर शोभित नारी
प्रगति-पंथ पर धावित सस्मित
पड़ि रहलै ओ पुरुष पर भारी

आबि रहल अदौ सँ जग मे
वैचारिक भिन्नता अनिवार्य
दूर दृष्टि ओ करुणा-निष्ठा

छै ओकरा मे अपरिहार्य
क्षिप्र गतिए पसरि रहल छै
दिवा-निशा संचारक क्रांति
टूटि रहल जड़ता केर सिक्कड़ि
दूर भ' रहल दंभक भ्रांति
विज्ञान बलें संसार बनल अछि घर-आँगन
आ खेत-खरिहान
मुट्ठी मे मोबाइल-भू-सागर
मंगल पर जयबाक अभियान
एक मात्र थिक विजय-पताका
प्रजातंत्र मे जन-आधार
धन-बल-मंगलदायक जनता ओएह थिक
सुख-शांतिक आगार
उच्च पदस्थ कन्या लोकनिक लेल
अहम् समस्या भेल विवाह
मनोनुकूल वर केँ ताकब
भ' गेल अछि महा कठिनाह

हिनका लोकनिक जीवन मे अछि
'कैरियर' केर प्रथम स्थान
दोसर नम्बर पर वर अबै छथि
तकर भला अछि कोन निदान!
मोन पड़ैए जखन-तखन
सभागाछी कपिलेश्वर ओ दुर्गास्थान
पजियार घटक केर अता-पता नहि
सगरो फुजि गेल विवाह संस्थान
हिनका लोकनिक बात भिन्न थिक
एक टांग दिल्ली
दोसर जपान
छिछिआएल घुरैए अभिभावक कोना क' होएत
कन्यादान?
कन्या मुम्बइ मे पदस्थ तँ वर कार्यरत



बंगलुरू
पुरना चालि-ढालि केँ त्यागू युग केँ संग
चलू-दौड़ू
युग-युग सँ प्रताड़ित-मर्दित हमरा लोकनि
रहलहुँ अछि शांत
आब न मानब होयब विजयिनी
विश्व भरिक नारी निर्भ्रान्त
जुनि अपने चिंतित होउ अंकल
हम सभ छी चौकस-चौकन्न
प्रज्ञा-प्रेरित नारी जग केँ
काटि चुकल अछि बहुत हकन्न
प्राप्त करब अधिकार अपन हम लड़ब-मरब
करब सभ काज
संघर्षक बल पर आरक्षण लेब
करब नहि हम कनियो लाज—
बाजलि मूमू वायुयान दिस मुस्की छोड़ैत
बढ़बैत पैर
विदा कएल 'टा-टा' कहि ओकरा
नव आशा संग घुरलहुँ खैर!

# भोला बाबू

मातृभाषा के प्रचारक
बी.ए.बी.एल. पास
प्रगतिशील नवीन विचारक
भोला लाल दास
सामाजिक चेतनाक समर्थक
भेल जीवन जनिक सार्थक
उदारताक दृष्टांत
मौन साधक एकांत

राष्ट्रीय एकताक संवाहक
मिथिला मैथिलीक उद्धारक
युवा शक्तिक महाप्राण
प्रख्यात जनिक अछि गान
भाषा आन्दोलनक सूत्रधार
मिथिला-ग्रीवाक दिव्य हार
'मिथिला' 'भारती'क अमर लाल
मैथिलीक दधीचि बाबू भोला लाल

साहित्य परिषदक महामंत्री
कार्य कएल अहर्निशि मैथिलीक सपूत यथा संत्री
'मैथिली' 'भोला बाबू' आ 'परिषद'
भए गेल छल पर्याय
जीवनपर्यन्त लड़ैत रहला
सहल नहि अन्याय



रिपु-दलक हेतु जे महाकाल
कमला-कोसीक स्वर्णिम मराल
'चाँद' हिन्दी पत्रिका मे लिखैत रहला
मैथिलीक पक्ष मे निर्धोक
विरोध मे 'जयचंद' उठला
प्रकट कयलनि शोक
भूमिकम्प बनि गरजि उठला
संग लए बहु 'लाल'
प्रत्युत्तर मे कहल गेल :
'चंद लाल दासों की भाषा है मैथिली' तत्काल

किन्तु ने मानल हारि कहियो
भाँजति रहला लौह-लेखनी सदिकाल
यैह कारण संपूज्य भेला
गर्वोन्नत भेल मैथिलीक भाल
हिनकहि प्रयासें पटना विश्वविद्यालय
मैथिली केँ मान्यता कएल प्रदान
तदंतर आनहु विश्वविद्यालय मे
स्वीकारल गेल मैथिली निदान

बाल-साहित्यक निर्माता
कर्त्तव्यनिष्ठ आन्दोलनकर्ता
प्रकाशन-विपननक अनुष्ठाता
आ मैथिलीक प्रतिष्ठाता
मैथिलीक भविष्य छल—
हुनक चिंतनक परम सत्य
हुनक संघर्ष हुनक त्याग
हुनक आत्मबलिदान रहत स्मरणीय नित्य...

## कलम सिपाही : राजकमल

अत्यधिक विवादग्रस्त
नानाविध रोगत्रस्त
युयुत्स आ संघर्षरत पूर्णिमाक चान सन अमल-धवल
आन्सटीन सन सफल
राजकमल...

महा उत्तेजक रचनाकार
नारी-पीड़ाक चित्रकार
'आदिकथा' 'आन्दोलन' 'पाथर-फूल'क उपन्यासकार
महिला-मुक्तिक पैरोकार
मनीन्द्र नारायण फूलबाबू अति विमल
राजकमल...

'ललका पाग' 'साँझक गाछ' 'फुलपरासवाली' आदिक कथाकार
विधवा-वारांगना-उत्पीड़नक कलाकार
शिल्प-विषय दुनू मे प्रगतिशील प्रखर उदार
चर्चित-अर्चित 'स्वरगंधा'क कवि प्रबल
सर्वाधिक चर्चित मेधावी अटल
प्रयोगवादी राजकमल...



## वाक्-विमर्श

कलकत्ता मे देने छलाह
बाबा (यात्री-नागार्जुन) तुर्गनेवक
कालजयी कृति 'बनजारा'
आ दिल्ली मे अछि दिलीपक
हमरा समक्ष
सुचिंत्य विलक्षण कविता संग्रह
'बनिजाराक देस मे'
करैत कटाक्ष
करैत समय सीमाक अतिक्रमण
तमसावृत्त आकाश कैँ चीरैत
आशा किरण
अडिग आस्था आ विश्वासक संग
विकास-प्रक्रियाक समधानल डेग
यत्र-तत्र व्यंजनाक सौन्दर्य
शब्दक बदलैत अर्थ
संवेदनाक आवेग
बहुत दिनक बाद फटा-फट
फूजल गवाक्ष
प्राण वायुक संग आलोकित कक्ष
भाषाक कविता तकरे साक्ष्य
विश्व बजारक नियंता
बनिजार वर्ग पुनः शिखर पर भाइ
ठेंगा देखा रहल पूंति कसाइ

लोक स्तब्ध आत्महत्या पर बिर्त कृषक
सर्वहारा क्लांत
कतए छथि ऐंजिल मार्क्स लेनिन आइ...



# अथ कविता उवाच

अति विस्तृत अछि कविता केर आकाश
असुर निरंजक
जन-मन-रंजक
दिग्दिगन्त मे व्यापित एकर प्रकाश
देखना जाइछ जतए-ततए
सभ ठाम
नगर-महानगर शहर-कस्बा आ गाम
ध्वस्त करैछ ई जाति-वर्ग
आ मजहब केर देवाल
बिजलौका बनि पहुँचि जाइछ झट
रूस अमरिका चीन आओर नेपाल
बनि गेल छै अधुना ई जग मे
सभ लोक केर मीत
बनि गेल छै ई राष्ट्रगीत
सर्वत्र एकर छै जीत
प्राप्त रहै छै नित-प्रति एकरा—
सागर केर गहिराइ
पृथ्वी केर गोलाइ
आओर भेटल छै सरिपहु एकरा—
माउन्ट एवरेस्टक ऊँचाइ
नहि छै राजनीति सँ एकरा—
मिसियो भरि परहेज
स्वागत गान करे छै एकर
चिड़ै-चुनमुनी हेंजक-हेंज

प्रकृति छै नहि बाँतर कनिञो
बनल रहै छै सखी-बहिनपा एकरा लेल
दागी सभ केँ ताकि-ताकि क'
पहिरौने ई रहैए नकेल...

कहियो प्रकृति-शृंगार-देह धरि
सीमित रहैत छल कविता
नौरिन बनि छिछिआइत घुरै छल
राजदरबार मे कविता
से बात मुदा नहि रहि गेलैए आइ
ओ दिन कहिया ने बीत गेल छै भाइ
अन्यायक विरुद्ध प्रशासनक लगाम
अमानवीयताक विरुद्ध एटम-नापाम
जवान केँ करैत
लाखहु दुआ-सलाम
अछि समर्पित पूर्ण रूप सँ देशक प्रति ओ आइ
यैह छै ओकर अस्तित्वक
एक मात्र लड़ाइ...

पूर्व मे मनोरंजनार्थ
लिखल जाइत छल कविता
नारीक अंग-विन्यास मे रहि व्यस्त
करैत छल स्रोता केँ पानि-पानि
आ नृपति केँ पस्त
राजा-महराजाक स्तुति-प्रशंसा मे
आश्रयदाताक मिथ्या श्लाघा मे
प्राप्त करैत छल यश प्रतिष्ठा आ नाम
अर्जित करैत छल
विरुद आ ग्राम
पहिने काव्य-मानकक आधार पर
लिखल जाइत छल कविता
रस छन्द अलंकारक बन्धन मे



रहैत छल आबद्ध
मिथक आ रहस्य केँ नुकौने
शब्द आ अर्थ केँ अर्धावृत्त-अनावृत्त कयने
सतत सतर्क आ सन्नद्ध
रहैत छल कविता
मुदा आइ लिखल नहि
गढ़ल जाइत अछि कविता
आइ पारदर्शी आ आवरणहीन
तीक्ष्ण व्यंग्य करबा मे प्रवीण
सर्वथा विंदास अछि कविता...

मनोरंजनक साधन नहि अछि आइ कविता
जीवनक पर्याय
आ संघर्षक लेल आयुध
बनि गेल अछि कविता
नाभि-विवर सँ बहराय
जन-गण-मंगलदायक
सर्वहाराक उन्नायक
किसान-मजदूरक गायक भ' गेल अछि कविता
नितान्त नवीन आ भिन्न
फॉर्म आ कान्टैन्ट मे लिखल जाइछ कविता
राज-प्रासाद केँ त्यागि
जमिंदार आ पूँजीपति केँ छाड़ि
घर-आँगन आ खेत-खरिहान मे
चर-चाँचर आ बीयावान मे
मिल-फैक्टरी आ विभिन्न संस्थान मे
संसद सँ सड़क धरिक जुलूस मे
महा रैलीक जन-सैलाब मे शामिल अछि कविता
देशक न्यायपालिक आ संविधान मे
भ्रष्टाचारक अंत आ ब्लैक मनीक संधान मे
लागल अछि कविता
टाटा बिड़ला डालमिया

अम्बानी आ बिलगेट्स केँ त्यागि
विश्व शांति केर ध्वजवाहक
आइ भ' गेल अछि कविता
मुद्रणे धरि सीमित नहि रहि
आडियो विडियो नेट-वेबहु पर
क' लेलक अछि कब्जा कविता
मरल नहि अछि कविता
ओकर रूप बदलल अछि...
ओकर तेवर बदलल अछि...
ओकर मिजाज बदलल अछि...



## घर-बाहर

गाजा-हफीमक व्यापार सँ
पुलिस-अफसरक सरकार सँ
ठिकेदारीक चमत्कार सँ
नेतागिरीक प्रताप आ नमस्कार सँ
राता-राती लोक भ' रहल संपूज्य
आ कीनि रहल मकान पर मकान
अदना सँ अदना आदमी भ' रहल
बाहुबली कोटिपति महान
खुलेआम हथिया रहल खेत-खरिहान
मकान आसमान
संसद आ विधान

अहाँ खाइत रहू अल्हुआ-सुथनी
फाँकैत रहू फुटहा
सहैत रहू घर-बाहर
बाढ़निक मारि सर-समाजक झटहा
पार्टीक आशीर्वाद सँ
मंत्रीक अनुकम्पा सँ
अधिकारीक अनुशंसा सँ
दलालक अनुमति आ सहमति सँ
अहाँक मित्र सभ भ' रहलाह
पद्मभूषणक अधिकारी
देश भरि मे चलि रहल
राजनीतिक दोकानदारी

फूजि रहल एक सँ एक दिग्गज केर
भ्रष्टाचारक पोल
एक सँ एक अन्तरराष्ट्रीय खेलाड़ी केँ
उघारि रहल खोल
मुँह भ' रहल बहुतो केँ देखबा योग्य
खेने होथि जेना अगबे ओल
आब नहि रहल समाज मे
प्रतिष्ठाक कोनो मोल
दुहैत रहू अनेरुआ गाय केँ
आ भरैत रहू डोल
एक ने एक दिन पेट फाटत
देखार हैत भूगोल

अहाँ घसैत रहू कलम
आ करैत रहू साहित्यकारी
लोक-वेदक लेल अहाँ भ' गेल छी
'वायरस बेमारी'
'फ्रीलांसर' बनि व्यर्थ मे
क' रहलहुँ घर भरि केँ तबाह
लोक बुझैए अहाँ केँ
निट्ठाह बताह
अहाँ बुझैत रहू अपना केँ
महा महो उपाध्याय विद्वान
दोसराक दृष्टि मे अहाँ छी
महा बुड़ि श्रीमान

से जे कहबाक होइ लोक कहओ
जे बुझबाक होइ बुझओ
हाथी चलए बजार
कुत्ता भुकए हजार
हम अपना महींस केँ कुड़हरिए नाथब



किनको किएक फटै छनि छाती
जहिना मोन होएत तहिना नाचब
किएक लगै छनि किनको दाँती
हम चलैत रहब चलैत रहब
बढ़ैत रहब लगातार
जिनका जे किनबाक होनि किनैत जाथु
फुजल छै बजार...

## जय हो मानव जातिक जय हो

एहन अन्हेर कतहु नहि देखल
मानवताक इतिहास मे
विश्व-विनाशक अट्टहास अछि
बगदादिक परिहास मे

जलन द्वेष ईर्ष्या सँ प्रेरित
रावण ठाढ़ बजार मे
आतंकी बनि भू-मंडल केँ
हथियेबाक प्रयास मे

नर-संहारक हवन-कुण्ड अछि
सृजित भेल ईराक मे
नर-मुंडक ढेरी लागल अछि
जग केँ गिड़िबाक नेयार मे

घूमि रहल भू-मंडल भरि मे
अणु बम केर फिराक मे
ताण्डव मचा रहल अछि सबतरि
दानव केर मिजाज मे

मुट्ठी मे जग केँ रखबा लै
स्वप्न सजौने आँखि मे
नभ-मंडल मे शोर मचल छै
मानव बम छै पाँखि मे



जय हो मानव जातिक जय हो
विश्व-शांति केर यत्न मे
एकजुट भए, महाशक्ति सभ
जग-रक्षाक प्रयत्न मे...

# बन्न करू ड्रामा श्रीमान

महँग भेल रोटी महँग भेल कपड़ा
महँग भेल मकान यौ
कोना क' पढ़त धिया-पुता आब
शिक्षा भेल दोकान यौ

एहन ने देखल जग मे कत्तौ
नारी केँ अपमान यौ
पयरक चप्पल सँ बेसी नहि
नारी केँ सम्मान यौ

ऊपर सँ नीचा धरि सभतरि
भ्रष्टाचारक दलान यौ
तरे-तर मिलल अछि सभ क्यो
एक सँ एक महान यौ

परिवारवाद अछि पसरि रहल
ई खतरा केर निशान यौ
जहल आइ बनि गेल अछि भोला
'फाइव-स्टार' समान यौ

सावधान सभ क्यो 'नेता' सँ
सम्हारत देश जवान यौ
नेता-बिल्डर लूटि रहल आ
चुप अछि हिन्दुस्तान यौ



बाबा सभ जे जुलुम करैए
पूछू नहि ओकर शान यौ
फाँसी पर लटकाऊ सभ केँ
तोड़ू ओकर गुमान यौ

पुनि बैसल बेताल डारि पर
कचड़ि रहल अछि पान यौ
खतम करत जनता ओकरा
ओएह जग केँ भगवान यौ...

●●●




**वीरेन्द्र मल्लिक**

**जन्म तिथि :** 3 जनवरी, 1937 ई. (प्रमाणपत्र)
9 नवम्बर, 1934 ई. (जन्मपत्र)

**शिक्षा :** एम.ए., पी.एच-डी.

**वृत्ति :** एम.जी.आर.अकादमी, कोलकाताक अवकाश प्राप्त हिन्दी विभागाध्यक्ष।

**प्रकाशित पोथीक नाम :** अग्नि-शिखा, अथातो काव्य जिज्ञासा (कविता-संग्रह), प्रेम-सौन्दर्य विधायक विद्यापति (शोध ग्रंथ), नाटक आ रंगमंच : प्रकृति आ प्रतिमान (आलोचना), प्रथम पुरुष (काव्यालोचना)।

**अप्रकाशित पोथी :** विभूति-विमर्श (शोधपरक साहित्यिक परिचय); कविता ठाढ़ बजार मे (कविता संग्रह); मिस लाल (कथा संग्रह); मैथिली पत्र-पत्रिका : एक सर्वेक्षण (शोधपरक आलेख); धिया-पुताक नाम (नामकरण); प्रेम-गीत-विद्यापति (संकलन); मूल्यांकन विद्यापति (समालोचा) आदि।

**सम्मान :** मिथिला विकास परिषद, कोलकाता—यात्री सम्मान, विद्यापति स्मारक मंच, कोलकाता, लाइफटाइम एचिवमेंट अवार्ड, अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली, साहित्य सम्मान, चेतना समिति, पटना, यात्री चेतना पुरस्कार, अखिल भारतीय मिथिला संघ, दिल्ली, भोगेन्द्र झा सम्मान, मिथिला सांस्कृति परिषद, आसाम, राजकमल सम्मान, मैलोरंग, दिल्ली, ज्योतिरीश्वर सम्मान आदि सँ सम्मानित।

**स्थायी पता (पैत्रिक) :** ग्राम+पो. परसौनी, मधुबनी, बिहार-847228

**पत्राचार-पता :** ए-816, जी.डी. कालोनी, फर्स्ट फ्लोर, हनुमान मंदिर के निकट, मयूर विहार, फेज-3, नई दिल्ली-110096

ई मेल : virendra mullick@gmail.com



अंतिका प्रकाशन प्रा. लि.
सी-56/ यूजीएफ-4
शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन-II
ग़ाज़ियाबाद-201005 (उ.प्र.)

मूल्य : ₹ 350/-

ISBN 978-93-91925-69-7

